ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

मई-अगस्त, 2022, वर्ष-6, अंक 2-5

आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' विशेषांक

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)
डी के सिंह (पटना)

एह अंक के अतिथि संपादक : दिलीप कुमार
प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना), सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

दिलीप कुमार /5

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

आचार्य चेतन जी के भोजपुरी सेवा– डॉ ब्रज भूषण मिश्र/6–11
होनहार कवि के माथ पर हाथ रखे वाला साहित्य–ऋषि– मनोकामना सिंह 'अजय'/12
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'–दिलीप कुमार/13–15
आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के अमृत महोत्सव पर सनमन– गंगा प्रसाद अरुण/16–17
सरधा जोग चेतन जी के हार्दिक अभिनंदन– डॉ जय कान्त सिंह 'जय'/18–19
चेतन जी के साहित्यिक चेतना आ अवदान – डॉ अजय कुमार ओझा /20–22
डॉ हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की सृजन दृष्टि में झार खंड की संस्कृति–कनक किशोर /30–31
भोजपुरी–हिन्दी अनुरागी : श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी – राजेश भोजपुरिया/32–33

• गीत/गजल/कविता

अभिनंदन– राम प्रसाद साह/34
इन्द्रधनुषी चरित : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' – कनक किशोर/35

• साक्षात्कार

डॉ हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' से दिलीप कुमार के बातचीत /23–29

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

आचार्य चेतन आ 'फूल गंगबरार के' – मार्कन्डेय शारदेय/36–37
'हूलिदे पेशावर ले' के बहाने – जयशंकर प्रसाद द्वि वेदी/ 38–39
ले तीरथ–जल बदरिया, खुसबू छिरिके धाइ– डॉ सुमन सिंह/40–41
भोजपुरी के मानक दोहा संग्रह : 'भीतर आँत धुआँत बा' – सूर्यदेव पाठक 'पराग'/46–47

• साहित्यिक समाचार

आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' : इन्द्र धनुषी काव्य व्यक्तित्व के अमृत महोत्सव समारोह – माधवी उपाध्याय /42–45

विपुल साहित्य के धनी चेतन जी

दिलीप कुमार

भोजपुरी–हिन्दी के कवि, साहित्यकार आ आलोचक डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के जीवन आ साहित्य पर केंद्रित एह विशेष अंक के सम्पादन करत अपार खुशी के अनुभूति हो रहल बा। डॉ. चेतन जी एगो सुलझल विचार के विवेकवान आ अत्यंत संवेदनशील साहित्यकार हईं। इहाँ के संवेदना आ चेतनाशीलता के कलमकारी साहित्य के अमूल्य निधि बा। 10 मार्च 1942 ई. में बिहार के भोजपुर जिलान्तर्गत (तब शाहाबाद) बिहिया थाना के चारघाट गाँव में जनमल डॉ. चेतन जी के रचनात्मक सक्रियता नइकी पीढ़ी खातिर प्रेरक आ स्तुत्य बा। इहाँ के व्यक्तित्व एगो सफल अध्येता, सुकण्ठ्य कवि आ चिंतक के रूप में बहुआयामी बा।

गृहस्थ परिवार में जनमल डॉ. चेतन जी परिवार से लेके समाज आ साहित्य जगत तक इहाँ का दीपक के तरे अँजोर फइलावे के यथासाध्य सफल उतजोग करत रहत रहल बानीं। लइकाइयें से कुशाग्रबुद्धि के डॉ. चेतन जी सन् 1966 ई. में बी.एच.यू., वाराणसी से स्नातकोत्तर के उपाधि पवलीं। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी के सुविख्यात आलोचक आ विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्वि वेदी के निर्देशन में 'मीरा : प्रेम की क्रांतिकारी साधिका' विषय पर पीएच.डी. के उपाधि से अलंकृत भइनीं। बाद में इहवें से व्याकरण, सांख्य दर्शन आ संस्कृत साहित्य में आचार्य के उपाधि पवलीं।

डॉ. चेतन जी शुरूवे से स्वाभिमानी आ जिज्ञासु प्रवृत्ति के अध्येता रहल बानीं। वाराणसी के एगो कॉलेज में बतौर व्याख्याता पद पर कार्य करत इहाँ के प्राचार्य से वैचारिक मतवाद में समझौता का जगहा सीधे त्याग के राह अप. नवलीं आ सन् 1977 ई. में स्थायी रूप से राँची प्रवास का ओर अग्रसर भइलीं। ई समय इहाँ के जिनिगी के सबसे बड़ 'टर्निंग प्वाइंट' का रूप में साबित भइल। हिन्दी–भोजपुरी के अनेक मौलिक पुस्तकन के सृजन, सम्पादन आ अनुवाद के कार्य करत साहित्य–समाज के अपना विलक्षण मेधा से प्रभावित आ लाभान्वित करत रहल बानीं। सरकारी आ गैर सरकारी संस्थन से अनेक सम्मान आ पुरस्कारन से पुरस्कृत डॉ. चेतन जी अपना सकारात्मक सोंच का साथे समसामयिक रहत साहित्यिक अभिव्यक्ति का रूप में अनेक भषन के ससमय आ यथास्थान साधिकार उपयोग करत रहल बानीं। आध्यात्मिक प्रवृत्ति के कर्मानुरागी अपना जिनिगी में अर्थ–प्राप्ति के कबहूँ मुख्य ध्येय ना बनवलीं।

डॉ. चेतन जी के जीवन आ विविधवर्णी साहित्यिक अवदानन के लेके बहुत पहिलहीं से पत्रिकन के विशेष अंक निकाले के योजना महसूस कइल जात रहे। एही बीचे एगो अइसन सुखद संयोग बनल कि एकर राह तनी जादे सहज आ कंटकरहित हो गइल। डॉ. चेतन जी के व्यक्तित्व आ रचनात्मक अवदानन के लेके एगो अभिनंदन–ग्रंथ प्रकाशित करे के योजना बनल। ओकरा सम्पादक–मण्डल के एगो सदस्य का रूप में हमहूँ ओह साहित्यिक यज्ञ में शामिल रहीं। ग्रंथ के आकार तनी बड़ भइला का वजह से भूलवश कुछ रचना संगणित भइला का बादो, त कुछ ससमय ना पहुँचला का कारन प्रकाशन से अंतिम रूप से वंचित हो गइल। विचार भइल कि काहें ना सभ के संगोर– बटोरे के आ कुछ अउरी उत्साही रचनाकारन के रचनन के मंगा के सम्पूर्णता में एगो विशेष अंक निकाल दिहल जाव। एह क्रम में 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सम्पादक श्रीयुत जयशंकर द्विवेदी आगे बढ़िके सोझा अइनीं आ अपना पत्रिका के विशेष अंक केन्द्रित करे खातिर प्रस्ताव दिहनीं। आयोजक समिति ओके सहर्ष स्वीकृतियो दे दिहलस। एह खातिर द्विवेदी जी ध न्यवाद के पात्र बानीं। एह विशेष अंक के सम्पादन के जिम्मेदारी हमरा के सऊँपल गइल। हम आयोजक समिति आ पत्रिका परिवार के हृदय से आभारी बानीं।

डॉ. चेतन जी के साहित्यिक कार्य विपुल बा। एह सभ के मूल्यांकन के जरूरत बा। एह दिशा में 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के ई प्रयास सराहनीय मानल जाई। कवनो कवि, साहित्यकार आ साहित्य के बारे में अद्यतन होखे खातिर पत्र–पत्रिका सबसे बड़ माध्यम होले। आलोचना ओकरा के एगो मानक निकष प्रदान करेला। एह दिसाईं डॉ चेतन जी पर केन्द्रित एह अंक के आँकल जा सकेला।

स्वभाव से विनम्र, मृदुभाषी आ अध्यवसायी प्रवृत्ति के डॉ चेतन जी अपना जीवन के हरेक क्षण आ वैचारिक आयाम के साहित्यिक धरातल पर उतारे के सफल आ नायाब कोशिश कइले बानीं। अबहीं उहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ अधिवेशन, मोतिहारी में बतौर अध्यक्ष पद खातिर निर्वाचित होके अपना सूझ–बूझ आ विवेक से माई भाषा भोजपुरी के बढ़न्ती आ समृद्धि खातिर लागल बानीं। हम उहाँ के लमहर उमिर का साथे साहित्यिक सक्रियता खातिर शुभकामना करत बानीं।

उमेद बा कि पाठक आ अध्येता लोगनि के ई अंक पसंद आई आ ऊ लाभान्वित होइहें।

धन्यवाद !

आचार्य चेतन जी के भोजपुरी सेवा

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

संस्कृत आ हिंदी साहित्य के विद्वान अउर माता आ मातृभूमि अस मातृभाषा भोजपुरी से प्रेम करेवाला मनई हईं आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन जी। अपने शास्त्र पढ़ले बानी, आत्मसात कइले बानी, लोक के अवगाहन कइले बानी, लोक में विश्वास बा आ लोकव्यवहार जानीले। अपने हिंदी के सङही भोजपुरियो में लिखिले आ भोजपुरी पर हिंदिओ में लिखिले आ विचार करिले। भोजपुरी के लोकगीतन के विभिन्न प्रकार पर आचार्य जी के लिखल चार गो किताब हमरा पढ़े के मिलल बा, ऊ बा– माटी गावे गीत, बिरहा बिनोद, सावन के झींसी आ लोकगंधी भोजपुरी के संस्कार गीत। चेतन जी के भोजपुरी के पाँच गो गीत आ कविता संग्रह अउर हमरा सोझा बा– उबियान (खंडकाव्य), भीतर आँत धुँआत बा, गीत प गीत, हूलि दे पेशावर ले आ फूल गंगबरार के। लिंगायत संप्रदाय (कर्नाटक) के संत लोग के उपदेशन के 'वचन' नाम से जवन भोजपुरी अनुवाद तैयार भइल आ छपल, ओ अनुवादक लोग में चेतन जी प्रमुख रहीं।

लोकगीतन पर ऊपर गिनावल चारो किताब ना खाली लोकगीत आ ओकरा विभिन्न प्रकारन के विशेषता बतलावत बा, ओकरा धुन आ लय पर बात करत बा, बलुक सैंकड़न लोकगीतन के संग्रह के रूप में धरोहर के जोगावे के काम करत बा। लोकगीत लोक के सहज अभिव्यक्ति ह, जे लोक में प्रचलित होके, जगह भेद से, गवनई के भेद से कुछ जुटत आ कुछ छूटत चलल आवत बा। एह लोकगीतन के रचवइया जरूर कोई रहल होई। बाकिर समय के चक्र में गीत त अदलत–बदलत बरकरार रहल, रचवइया भुला दिहल गइल। चेतन जी अपना एह चारो संग्रह सब में परम्परा से गवा रहल ओह लोकगीतन के भरसक संग्रहित त कइलहीं बानी, बाद में ओही धुन आ लय में रचल आधुनिक कवि भा गायको लोग के रचनन के संग्रहित कइले बानी। एह लोकगीतन के लय आ धुन में लोकेतर आ आधुनिक साहित्य के रचना

भइल बा। भोजपुरी लोकभाषा ह, त लोकधुन एकरा साहित्यिको गीतन खातिर बहुत सटीक बइठेला।

'माटी गावे गीत' (2009 ई.), लोकगीत संग्रह के पहिलकी किताब ह, जवना में एक तरह से बसंत ऋतु में गावल जाएवाला लोकगीतन–बसंत, होरी, फगुआ, चौताल, रसिया, धमार आ चइता के सैंकड़न संख्या में संकलित कइले बानी, चेतन जी। एह में पारंपरिक गीतन के सङे संत कवियन आ अज्ञात भा बिसरा दिहल गइल कविगण के रचनन के संकलन भइल बा। एह से इहाँ के संग्राहक के गुन उजागर भइल बा। अपना संग्रह कार्य के बरनन करके एह में आगे के संग्राहक लोग खातिर अपने मार्गदर्शन कइले बानी। एह किताब के भूमिका लिखे के क्रम में लोकगीतन के खूबी के जवन चर्चा कइले बानी, ऊ इहाँ उरेहे जोग बा– ''जइसे गुलाब आ कमल के कोमल कोष में ओस के बूंद आहिस्ते आहिस्ते चू जाला आ पतो ना चले, ओसहीं भोजपुरी गीतन में मोहक लय रसे–रसे चू जाला आ 'उद्गीथ' के उँचाई दे देला। गीत गायक के कंठ रूपी पतुकी में उबलेला, ठंढा होला आ लय के जेंवन परि गइला पे छाल्ही, लयन, दही, घीव, मट्ठा आ खंखोरी अइसन कइ गो रूप में अभिव्यक्त हो के, अलग – अलग गुण – धर्म, स्वाद आ तृप्ति के भिन्न आधार के रचना करेला। भोजपुरी गीतन के भीतर से झाँकत बिंब, प्रतीक आ यथार्थ के झलक, प्राकृतिक सौन्दर्य–चेतना आ लोकगंध के सतरंगी छवि झलमलाये लागेले। गावेवाला जानुक तुरीय अवस्था में चहुँप जाला आ सुनेवाला ओह लय मंडल के मूर्च्छना में संज्ञाशून्य हो जाला– रस के पूर्ण निष्पत्ति में गोता लगावे लागेला। भोजपुरी समाज के सिरिजना में गीत के प्रतिशत अधिका बा। गीत एह समाज के रक्त में दर्ज बा। भोजपुरिया लोग छन्द रचेला, छान लगावेला आ छन्दे से अपनहूँ रचा जाला। छन्द में, मर्यादा में जियेला। एकरा जीवन के नक्शा गीत से तइयार भइल बा।'' 'कहे के बात ना बा कि काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी लोकगीत परिपूर्ण बा। ललित भाषा में गँवई उपमा से चेतन जी लोकगीतन के खूबियन के समुझा देले बानी। एह संग्रह में आठ गो बसंत गीत, चउबीस गो होरी गीत, अनठानबे गो फगुआ गीत, चार गो धमार, पाँच गो रसिया आ आठ गो चौताल गीत बा, जे बसंत पंचमी से फगुआ तक गवाला। चइतो बसंत ऋतु के गीत ह जे फगुआ के भोर से गवाये शुरु होला। संयोग–वियोग सिंगार प्रधान चइता गीतन के संख्या संग्रह में दू सै सताइस बा। लोक गीतन के द्वारा समाज के हाल, इतिहास, भूगोल, धर्म आ आध्यात्म सब के जानकारी मिलेला।

कजरी ऋतु गीत ह, जे पावस ऋतु में गावल जाला आ एकर बड़ा प्रभाव बा, भोजपुरी समाज में। 'हिन्दी साहित्य कोश' (भाग–1) में कजरी के उत्पत्ति भोजपुरिये क्षेत्र में बतावल गइल बा। कहल–गावल जाला–'कजरी मीरजापुर सरनाम'। एकर कई गो प्रकार प्रचलित बा। बनारस आ मिरजापुर जइसन जगहन पर कजरी के दंगल होत रहल ह। सावन महिना में जइसहीं बरखा के बूनी पड़े लागत रहल ह, बेटी बहिन लोग कवनो गाछ के डाढ़ि में झुलुआ डारत रहल ह आ झूलत – झुलावत में गीत गावत रहल ह। बरखा ऋतु में सिंगार के, कहीं त काम के उद्दीपन बढ़ जाला, पिया मिलन के उत्कंठा बढ़ जाला। जे नायिका अपना प्रियतम के पास रहेली, ऊ चाहेली कि बोलहटो पर नइहर ना जास– 'भइया जे अइहें बोलवइआ सवनवा में ना जइबे ननदी'। चेतन जी कजरी धुन में लिखल अपना एकावन गीतन के 'सावन के झींसी' (2017 ई.) में संग्रहित कइले बानी। एह संग्रह में शाश्वत श्रृंगार के संयोग वियोग त बड़ले बा, कवि के प्रवास वाला क्षेत्र झारखंड के महिमा मंडन करे वाला विषय उठावल गइल बा। सोभाविक बा, काहे से कि बरखा ऋतु में वन प्रांतर के शोभा अद्भुत होला आ कजरी त बरखे के गीत ह। बाकिर 'सावन के झींसी' नामक पुस्तक के महत्त्व अतने भर नइखे। अपना दू आलेख में कजरी के व्युत्पत्ति, ओकर प्रकार, विषय वस्तु, ओकर धुन आ लय, ओकर काव्यशास्त्रीय विशेषता के साथ कजरी से कवि के प्रेम कथा सब कुछ बा। ऊ पढ़नउग आ जानकारी जोग बा। एह सिंगार परधान लोकधुन कजरी के कारगिल युद्ध के बरनन में कवि चेतन बहुत सफल भइल बानी–

''पौरुष गरमी मांगे बर्फीला मैदान पिया!
राखे आन पिया! तू बन जा मृत्युंजय
आ कारगिल के सिवान पिया!
राखे आन पिया!1!
(गीत सं. – 34)

लोकगीत के एगो प्रकार ह बिरहा, जवन जातिगीत के वर्ग में राखल जाला। भोजपुरीए क्षेत्र में व्युत्पन्न एह लोकधुन के संबंध अहिर (यदुवंशी) लोग से जोड़ल जाला– 'कतनो अहिरा पढ़ी पुरान, बिरहा छोड़ि न गावे आन'। एहू लोकधुन में भोजपुरी के कवि लोग गीत रचले बाड़ें। एह क्षेत्र में परम्परा से प्राप्त ढेर विरहा प्रचलित बा। चेतन जी परम्परा से प्राप्त बिरहन के दू गो खंड बनवला के अलावे कवि रमेश ओझा, बिसराम, चेतन (स्वयं), चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, कुंजन, गंगा प्रसाद, बैद्यनाथ पांडेय कोमल, मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), श्रीकिसुन राय, प्राचार्य मनोरंजन आ आसिफ रोहतासवी के बिरहा के अलग अलग खंड बना के प्रस्तुत कइले बानी। हवलदार त्रिपाठी सहृदय कालिदास के 'मेघदूतम्' के पूरा पद्यानुवाद बिरहे छंद में कइले बानी। मधुकर सिंह 'रुक जा बदरा' खंडकाव्य बिरहे छंद में रचले बानी। भोजपुरी के कवि लोग प्रायः एह लोकधुन के प्रयोग करत रहल बाड़न। बाकिर, सब के समेटल संभव नइखे। जतना उदाहरण बाड़ें स ऊ ई बतावेला पर्याप्त बा कि ई लोकधुन/लोकगीत के ई प्रकार भोजपुरी लोक से ले के शास्त्रीय साहित्य तक में समादृत बा। सबसे बड़हन बात ई बा कि चेतन जी लोकगीत आ ओकर प्रकार 'बिरहा' पर लमहर शोधात्मक विमर्श वाला भूमिका बारह पृष्ठ में प्रस्तुत कइले बानी। एह भूमिका में बिरहा के इतिहास, भूगोल, काव्य विधान आ सौन्दर्य सबकर पता चलत बा। बिरहा के खूबी बतावे वाला ओह बिरहा के भूमिका में जगह दिहले बानी, जे परंपरा से प्रचलित बा –

''ना बिरहा के खेती भइया,
ना बिरहा फरे डार
बिरहा त उपजेला हिरदय में ए राम,
जब उमगे तब पार।''

निखालिस लोकगीत पर आधारित चेतन जी के चउथी पोथी बा–'लोकगंधी भोजपुरी के संस्कार गीत'। एह संग्रह में सोहर, गारी आ कुँआरी लइकियन द्वारा कइल जाए वाला व्रत पर तीन गो आलेख बा। सोहर वाला आलेख में संस्कार का ह आ केतना प्रकार के होला, एह पर विचार करत चेतन जी गृह्यसूत्रन, धर्मसूत्रन आ स्मृतियन में गिनावल संस्कारन के चरचा कइले बानी। उहाँ के कहनाम बा– ''सोहर में वर्णित नारी के जीवन में अस्मिता बोध की किरण का प्रस्फुटन नहीं हुआ है। अभी भी इनमें संतान–पुत्र और आभूषण की भूख तीव्रतर बनी हुई है। भोजपुरी सोहरों में इसकी अभिव्यक्ति पर्याप्त मात्रा में हुई है।'' एह आलेख के बाद सोहर (61 गीत), बधावा (7 गीत), खेलवना (18 गीत), झूमर (25 गीत), मुण्डन (8 गीत) आ जनेऊ (16 गीत) संकलित बा। एकरा बाद गारी गीत पर एगो विश्लेषण पूर्ण आलेख बा, जे एह पुस्तक के खूबी बा। शास्त्रन में जवन कामबीज के चरचा मिलत बा, ओकर उल्लेख करत चेतन जी गारी गीत पर विचार कइले बानी। चेतन जी लिखत बानी– ''भोजपुरी गारी गीत' जीवन की गहरी दाम्पत्य– अनुभूतियों का सच्चा स्वरूप है। तपे हुए जीवन की चमक और साँच की गमगमाहट से श्रीगणेश होता है 'गारी गीत' का। अपने दाम्पत्य जीवन के ठोस अनुभव को एवं स्त्री पुरुष की कामनाओं की रंगीन विविधताओं को इन गारी गीतों ने अपने अतल में आत्मसात किया है। नारी भावनाओं की गोद में जन्मी कामनाएँ मिठी याद की ताजगी देती हैं। कभी सत्य की ओर जाती भावनाएँ छली जाती हैं। भोजपुरी भाषी जनपदों में, विवाह के प्रत्येक विधान में 'गारी' ने अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है। एक विधि 'गुरहेती' या 'बरनेत' की होती है। उस अवसर पर भसुर को संबोधित कर गारी गाई जाती है।'' (पृ.–88) गारी गीतन के विश्लेषणात्मक अध्ययन के बाद गारी के 46 गीत और विवाह के विभिन्न अवसरन के 40 गीत संकलित बड़ुए। 'भोजपुरी प्रदेश में क्वाँरी कन्याओं के व्रत' शीर्षक आलेख में घाँटो–घँटेसरी, पीड़िया व्रत और भैया दूज–गोधन कुटाई गीतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ 13 पीड़िया व्रत के आ घाँटो के पाँच गीत संकलित बाटे। पुस्तक में संकलित गीतन में विवाह प्रकरण के जे गीत संकलित बा, उनका गारी गीत आ गुरहेथी के गीत पर हिंदी भाषा के प्रभाव बा आ आधुनिक जीवन पद्धति पर आधारित बा। यथा– 'संभलकर बैठना बेटी भसुर मँड़वा में आये हैं'।

आचार्य चेतन के काव्य चेतना के बारे में लोकगीत आ लोकधुन शैली में गीत रचला से पता चल जात बा। 'सावन के झींसी' में उहाँ द्वारा रचित एकावन गीत आ 'बिरहा बिनोद' में उहाँ द्वारा रचित डेढ़ सै से बेसी बिरहा एकर

प्रमाण बा। अइसे उहाँ के पहिला काव्य पुस्तक 'उबियान' बा जवना में एक खंडकाव्य आ कुछ फुटकर रचना बा। खंडकाव्य श्रीमद्भागवत महापुराण आधारित 'गोपी विरह आ कृष्ण के पत्रवाहक उद्धव के प्रसंग' पर आधारित बा। भ्रमरगीत ब्रजभाषा के बड़ा चर्चित भइल।

भोजपुरी के कवि लोग खास करके प्रबंधकाव्य रचेवाला कवि लोग–चंद्रधर पांडेय कमल आ पियूष जी अपना महाकाव्यन में एह प्रसंग के यथोचित स्थान देले बाड़ें। राम बचन लाल श्रीवास्तव के खंडकाव्य– 'गोपी विरह' आ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के 'गोपीगीत' में एह प्रसंग का विशेष महत्व मिलल बा। बाकिर, चेतन जी के 'उबियान' एह सबसे पहिले के ह। सवैया, कवित्त आ कविता में रचाइल ई प्रबंध मरम छूवेवाला बन गइल बा। लोक चेतना से परिपूरन आ शास्त्रज्ञान से लबालब चेतन जी काव्यके सौन्दर्य कथ्य, भाव, भाषिक संरचना से बढ़ा देले बानी। एके नमूना काफी बा बतावेला–

उनुके विरह सखी! दूबर भइलि देह,
मुँह बा पिअर मन मलिन भइल बा।
खटरस भोग रोग, गहना लागता भार,
बसन ना नीक लागे मइल भइल बा।
जनले ना प्रीति – रीति ढाहि देले नया भीति
अब ते मनावहूँ के अनेर गइल बा।
बिमल सनेह – नीर बहत जे रहे ओ के
कुबरी के कहला से रोकल गइल बा।

एह किताब में दू गो लमहर कविता आ आठ गो फुटकरो कविता बा। दुनों लमहर कविता 'चित्रांगदा चिंतन' आ 'अर्जुन चिंतन' भागवत कथाधारित ही बा। एह दुनो कवितन में मन में चल रहल विचारन के मूर्त कइल गइल बा, अमूर्त के मूर्त बनावत। चेतन जी के दुसरका कविता संग्रह ह 'गीत प गीत' (1998 ई)। एह संग्रह में खाली गीते ना, कुछ गजलो बा, दोहो बा आ हाइकुओ बा। संग्रह के गीतन के कथ्य, भाव आ शिल्प के बारे में कवि के कथन देखल जरूरी बा ''गीत प गीत' में पैदाइस के कँपकँपी बा। फूल खिले के बेरि के लय बा। भूंइ के फाँक से बीज अँकुरत खा के गुनगुन सुगबुगी बा। तनी कान लगा के सुनी। ध्यान लगा के गुनी। भाव अरथ के चुनी आ सही–गलत ओरि इशारा करीं।'' विविध भाव बोध आ विषय विविध काव्यविधन में अभिव्यक्त भइल बा, एह संग्रह में। नारी विमर्श के एगो कविता 'नारी' से चार पाँति देखीं कि कइसे नारी शोषित होत आवत बाड़ी –

साँसत, साजिश, संशय, कुंठा,
पग–पग भेंवता ढेर रहल।
बलत्कार आ मार व्यंग,
आ झाँसा–झाँसी फेर रहल।।

आदमी आदमी से कइसे दूर हो गइल बा, निअरा रहियो के पहचान नइखे, हेल मेल नइ खे। एगो हाइकु देखीं–

मित्र दू पंछी/पीपर के कोटर/ बात ना चित

अब पहिला पानी पड़ला पर किसान के खुशी के चित्रवाला पाँति देखीं –

हिय में कसक जगाइ,
रूप के लोभ उगावे मन–मन में।
कृषक–नयन–दीया बनि आइल,
बरखा के पहिला पानी।।

अगिला कविता पुस्तक बा चेतन जी के 'भीतर आँत धुँआत बा' (2009 ई.), जवन छव सै बाइस दोहन के संग्रह ह। एह में नीति–रीति, सीख–सीखावन के दोहा त बड़ले बाड़न स, बाकिर खूबी बा कि पारिवारिक, सामाजिक, प्राकृतिक स्तर पर जवन प्रदूषण बढ़ रहल बा, जे विसंगति पैदा हो रहल बा, कवि के दृष्टि उहाँ बा। भाषिक संरचना संस्कृत–हिन्दी –भोजपुरी के मिलल जुलल सरूप में बा आ चेतन जी लोक आ शास्त्र के एतहूँ समन्वय बनावे में सफल बानी। नमूना के कुछ दोहा प्रस्तुत बा जे हमरा कथन के समर्थन करत बा। जइसे–

इहाँ भँइसि पगुरा रहलि, तू अटपट सुरलीन।
तनिक तराना राग में, लय में छेड़े बीन।।
कइलसि मालिश देह के, खड़ा जोरि दस नोह।
तबहूँ बेटी ना बनलि, रहिए गइलि पतोह।।
धधके देश, लपट भरे, जन चरित्र अन्हुआत।
पेनी में सुनुगत रहे, ऊपर तिकछ धुँआत।।
लोर ढरत बा आजुओ, तक्षशिला के दाग।
कहाँ बुताइल आजु ले, नालंदा के आग।।
सिन्धु गोद में सिंकुर–सटि, सूतल रहल तरंग।
चिचिआइलि भितरी पटी, भइल शांति, सुख भंग।।

चेतन जी के मातृशक्ति, दैवीशक्ति में आस्था भइला आ शक्ति के साधना पथ के परिचायक बा उहाँ द्वारा रचित कवितन के संग्रह 'फूल गंगबरार

के' (2016 ई.)। ई भक्ति के व्यक्त करेवाला उत्कृष्ट काव्य पुस्तक बा। एक सै एक गीतन के एह संग्रह में कवि के समर्पण के भाव लखार भइल बा, माई के भरोसे भव सागर में अपने के छोड़ देवे के निर्णय बा –

होई पूत कपूत भा नीक – बुरा।
गिरनी ते उठा ली मायरिया।
जगला में लखीं, सुतला में लखीं,
सपनो में सुझा ली मायरिया।।
ओखरी में पड़ल कइ जनम से सिर,
मुशरा के चोटे घाही बा।
लखि के रकते रोहन दरई
चुचुकारी, निकाली मायरिया।।

एह काव्य में भारतीय दर्शन भरल पड़ल बा आ काव्य सौन्दर्य अपना निखार पर बा। विविध छंदन आ लोकधुनन में बन्हाइल कविता में अलंकार के चमत्कार भरल बा, ई बात संस्कृत के मान्य विद्वान डॉ. चंद्रकांत शुक्ल अपना भूमिका में स्वीकार कइले बानी।

जइसन कि ऊपर चर्चा भइल बा कि 'बिरहा बिनोद' में चेतन जी एक खंड अपना बिरहा के र खले बानी। बतावत चलीं कि चेतन जी के बिरहन के संख्या लगभग डेढ़ सै बा। परम्पर निबाह त सुमिरन के बिरहा लिखाइल बा, बाकिर ओके समय संदर्भ से जोड़े के कोशिश चेतन जी कइले बानी। एगो नमूना देखीं–

गाँव के बढ़ाव, बेटा बेटी के पढाव
परिवार में उगाव सदग्यान।
फरी फुली सभ केहू, उपजी गुलाब गेहूँ
खिली मुँह पर मुसुकान।।
न्याय के नीलाम घर बाटे कचहरिया

कि संसद बहस कोषागार।
आदमी गलतिया के संग्रह सदन बाटे
फरता फुलाता भ्रष्टाचार।।

लोकधुन कजरी पर आधारित रचल गीतन के संग्रह 'सावन के झींसी' में कजरी में अपने लिखल एकावन गीतन के संग्रह कइले बानी, जवना के लोक विधा के रूप में ऊपर चर्चा हम कर चुकल बानी, काव्य दृष्टि से एह पर विचार करीं त कवि चेतन अपना प्रवासी प्रदेश के प्राकृतिक सौष्ठव, आदिवासी महापुरुषन, उहाँ के समस्यन आ ओकर निराकरण से अपना के जोड़े से नइखीं चुकल। अपना शास्त्रीय ज्ञान से अपना कजरिअन के काव्य सौष्ठव देवे में पाछे नइखीं उहाँ का। सुखार आ दहार में खेती किसानी पर केतना मार पड़ेला, चेतन जी के कजरी ओकर बयान करत बा–

रुक रुकजो बादरा! पल भ कान दे।
अलसाइल हउवा के तनिक मान दे।।
झुलस गइल फेंड़, पौध, फूल ताव से
जरल लता, घास लूक के कुभाव से
सरगम जजाति के हवे सपना किसान के।
रुक रुकजो बादरा! पल भ कान दे।।

× × ×

साईं, साँवा गलक गइल
टँगुनी के सिर पर पानी बा
दूधा मकई के छाती में
टघरत पारा फानी बा।
मेह धार धार झोरे
पूरा पुरवा पवन झकोरे
लागे अब तब, टूटि जाई प्राण–डोर,
हमार चितचोर सजना!
पाती लिखत बानी ढारि नैना लोर,
हमार चितचोर सजना!!

कविता के आखिरी संग्रह जवन हमरा सोझा बा, ऊ बा 'हूलि दे पेशावर ले'(2019 ई.)। राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत आ कारगिल युद्ध के ऊपर लिखाइल लगभग पचहत्तर गो कवित्त के ई संग्रह आतंकवाद, आतंकवादी संगठनन आ एकर पोसेवाला देश पाकिस्तान के खिलाफ आक्रोश से भरल बा। ई संग्रह आचार्य गणेश दत्त किरण के 'किरण बावनी' के इआद करावत बा, जे 1962 ई. में चीन के साथ युद्ध के बेर लिखाइल आ सोहरत पवले रहे। चेतन जी छत्रपति शिवाजी के दरबार के कवि भूषण अस हुँकार भरले बानी। आजकल राष्ट्रवाद के बोलबाला बा आ चेतन जी भोजपुरी के स्वर एह बोलबाला में मेरा रहल बानी। आईं दू गो कवित्त से एह राष्ट्रवादी स्वर के स्वाद चिखल जाव –

केकर मतारी दूध देलसि पिआइ ढेर?
बम आ बनूकन से भूँजि देब देहिया।
गोड़ के धमस में ऊमस बाटे अगिया के,
घात हईं लांचर कुलांच मिग टोहिया।
कुंडली कचटि देबि फनवाँ छपटि देबि,
धरबि लपटि माली कपटी तें डहिया!
केहुनाठ डालि के, ओनाहि देब घाँटी तक
आहि–आहि करबे पनाह के दी याहिया?

× × ×

लश्करे तोयबा से, जानमाल छोयबा से,
लूट अन्न ढोयबा से चाटी त बजाले बीर!
उठि के तड़ाके, करगिल–अखड़ा पड़ाके
झट पंजा के लड़ाके चट माटी तें चढ़ा ले सिर।
हरकतुल मुजाहीद्दीन करिया विषैला नाग
मूरी थूरि, बीखि – दाँत तूरि, गलफर चीर।
लहू के कसम ले सीवान के शहीदन के
हूलि दे पेशावर ले खींचु खून से लकीर।

चेतन जी भोजपुरी में अनुवाद कार्य कइले बानी। कन्नड़ भाषा में लिंगायत सम्प्रदाय के संत महात्मा लोग के वचन के पद्यानुवाद भोजपुरी में। ई वृहदाकार ग्रंथ 'वचन' नाम से जे 2016 में छपल रहे आ जे कर्नाटक सरकार द्वारा प्रकाशित रहे। चूँकि एह में कुछ अउर अनुवादक लोग शामिल रहे, एह से ई पता ना चल पावत बा कि कवन वचन चेतन जी द्वारा अनुदित बा। तबहुँ त ई कहले जा सकत बा कि अनुवाद के स्तर बढ़िया रहे, जवना से ऊ अनुमोदित आ प्रकाशित भइल।

अंत में हम इहे कहे के चाहत बानी कि भोजपुरी जइसन बिना मान्यता प्राप्त भाषा में, मातृभाषा भइला के कारण चेतन जी लिखे छपवावे में आपन श्रम आ साधन सब खपवले बानी। संस्कृत आ हिन्दी जइसन भाषा के विद्वान भइला के बादो, उहाँ के भोजपुरी प्रेम प्रणम्य बा।

चेतन जी से भोजपुरी का अउर बहुत कुछ मिली, उमेद आ भरोसा कइल जा सकत बा।

❑❑

❍ श्रीनिलयम्, मुजफ्फरपुर (बिहार)

होनहार कवि के माथ पर हाथ रखे वाला साहित्य-ऋषि

मनोकामना सिंह 'अजय'

सन् 2014 5 अक्टूबर एतवार के दिन चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के एकंकी–संग्रह "अतुर्मता" आ "धर्मी" के लोकार्पण समारोह में आचार्य हरेराम त्रिपाठी जी "प्रताप कल्याण केन्द्र" छोटा गोविंदपुर (जमशेदपुर) पधारल रहलें । इहेवें हमार इक्का से पहिला बेर भेंट भइल रहे ।

भारत के आजाद कराने खातिर इ दल रहे । गरम दल आ नरम दल । गरमदल के पक्षधर रहलें सुभाष चन्द्रबोस आ नरम दल के पक्षधर रहलें महात्मा गांधी जी । ओसही भोजपुरी आंदोलन के गरमदल के पक्षधर रहलें चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह आ नरमदल के पक्षधर मानल जा सकेला आचार्य हरेराम त्रिपाठी "चेतन" जी के । चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के लोग "भाजपुरी के विश्व कोष के रूप में जानत रहे बाकिर कालीदास के कविता के भोजपुरी में अनुवाद के सराहना करत "चेतन" जी उनका "योगी" के उपाधि से विभूषित कइलें (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह–इयादों के झरोखा में–पृ.सं 146)

"जीवन–सत्य मिट्टी का सत्य एवं साहित्य के सत्य को यदि समाज धरातल पर कोई होनहार कवि लाकर तौलता है और समकालिन बोध की परिस्थिति को सीमा का पर्यटन करने का संकल्प लेता है तो उसके सिर पर हाथ रखना "चेतन" जी श्रेयस्कर समझते है (जिन्दगी धुआँ धुआँ. पृ. सं.10)

सन् 1999 में प्रकाशित "हलिदे पेशावर ले" में छपल एगो कविता आज्हो ओसही एगो सपना अस सॉच के धरातल जोह रहल बा।

"सुन रे कसाई!
काशमीर ह हमार
लेबे आवतानी डेरा
गाजीखान, छान खोर में ।
मीरपुर खास
लरकाना ले, रावल पीन्डी,
सरगोधा जोधा –
डेरा डालि दीदें भोर में
बीर कद्दावर पेशावर में
पियास मारि
हाला गुजराँवाला में
बोलि के अँजोर में
स्यालकोर साहीवाल
हूल मूलतान–दान
गड़ी महाबीरी झंडा
डंका दे लाहौर में ।
(हलिदे पेशावर ले – पृ. सं. 20)

छद्म युद्ध के अलावा 1965 आ 1972 के युद्ध में हारल पाकिस्तान के स्वभाव में कहाँ बदलाव आइल आज्ह ले। ऐही खातिर जनसंख्या फाउंडेशन के संरक्षक डाक्टर इंद्रेश के कहे के पड़त बा कि "पाकिस्तान कहता है कि बिना काश्मीर पाकिस्तान अधुरा है तो हमारा भी नारा होना चाहिए लाहौर, ननकाना, कराँची बिना भारत भी अधुरा है ।

"नन्द–नन्दन" चेतन जी के खण्ड काव्य है। एह में उहाँ का "वंशी भगवान रूद्रः" के अद्भूत वरनन कइलें बाड़ेन। कृष्ण के अराधना से खुश हो के भगवान शिव वंशी बन जात बाड़ेन।

कृष्ण जी भगवान शिव के ओही रूप में पूजले। पूजा में अराध्य के बइठे खातिर आसन चाही। कृष्ण अपना मुखचंद्रे के आसन बना दिहले। अपना मुकुर के छत्र बनवले। दूनो कान के कुंण्डल से आरती कूले। दूनो हाथ के अँगुरिन से पैर दबवले। अपना अधर सुधारस से भोग लगवले। ई वेमिसाल चित्रण कहल जा सकेला।

चेतन जी के साहित्य के लगभग हर विद्या में कलम–चलल बा यथा–कविता, कहानी, समीक्षा, संपादन, अनुवाद आदि। भगवान इनका के दीर्घायु राखस ताकि इनकर हाथ हमनी के माथ पर आर्शिवाद स्वरूप बन रहो। ❑❑

❍ कृष्णा भवन, विवके नगर, छोटा गोविंद पुर
जमशेदपुर–831015

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

दिलीप कुमार

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मो. तिहारी में आयोजित 26वाँ अधिवेशन के अध्यक्ष डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' एगो प्रसिद्ध कवि, विद्वान, साहित्यशास्त्री भाषामर्मज्ञ आ संपादक बानीं। भोजपुरी भाषा–साहित्य के विकास में डॉ. चेतन के अवदान उल्लेखनीय बा। भोजपुरी –हिन्दी –संस्कृत सहित अनेक भषन के जानकार आ मर्मज्ञ डॉ. चेतन के साहित्यिक उपलब्धियन भुलावल ना जा सके आ एह क्षेत्र में उहाँ के कार्यन के गतिशीलता आजुओ बरकरार बा। एगो सफल अध्येता, प्रसिद्ध साहित्यकार, चिंतकआ सुकण्ठ्य कवि के रूप में उहाँ के विराट् व्यक्तित्व स्तुत्य बाटे। डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के जन्म 10 मार्च, 1942 ई के ग्राम–चारघाट, थाना–बिहिया, जिला –शाहाबाद (अब भोजपुर), बिहार में पिता रामछबीला त्रिपाठी का घरे भइल। इहाँ के माई के नाँव श्रीमती राजमणि देवी रहे। छह भाई आ तीन बहिन में अपना पिता पाँचवाँ संतान श्री चेतन जी घर–परिवार में कुलदीपक के तरे बानी। गृहस्थ परिवार में जनमल श्री चेतन जी के आरंभिक शिक्षा गाँव के प्राइमरी स्कूल, पहरपुर में पूरा भइल। लइकाइये से कुशाग्र बुद्धि के मेधावी रहीं। परिणामतः प्राइमरी स्कूल में नामांकन सीधे बी क्लास में भइल। क्लास 'ए' के शिक्षा घरहीं में पूरा भइल। ओह बेरा प्राइमरी शिक्षा दू भाग में बँटाइल रहे– लोअर प्राइमरी आ अपर प्राइमरी। जब लोअर प्राइमरी– तीसरा क्लास पास क के पाँचवीं कक्षा में गइलीं तब एगो नया आ अनिवार्य विषय का रूप में 'संगीत' पढ़े के मिलल। हाइस्कूल, पहरपुर से मैट्रिक के परीक्षा उत्तीर्ण कइला का बाद महाराजा कॉलेज, आरा से इंटरमीडिएट आ स्नातक के डिग्री पवलीं। सन् 1966 ई. में बी.एच.यू., वाराणसी से स्नातकोत्तर के उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त भइल। सन् 1968 ई. में हिन्दी के सुविख्यात आलोचक आ विद्वान हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में 'मीरा : प्रेम की क्रांतिकारी साधिका' विषय पर संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से शोध कार्य पूरा क के पी–एच.डी. के उपाधि पवलीं।एही विश्वविद्यालय से व्याकरण, सांख्य दर्शन आ संस्कृत साहित्य में आचार्य के उपाधि पवलीं।

सन् 1967 ई. में वाराणसी (उ.प्र.) के एगो स्वायतशासी निकाय नंदलाल बाजोरिया कॉलेज में हिन्दी विभाग में बतौर व्याख्याता के पद पर योगदान दिहलीं। बाकिर, स्वाभिमानी, आत्मसंयमी आ स्वाध्याय प्रिय श्री चेतन जी के अपना कॉलेज के प्राचार्य से कवनो बात के लेके वैचारिक मतवाद के स्थिति पैदा हो गइल, जवना में समझौता के रास्ता ना अपना के 'एकला चलो रे' के नीति के अनुसरण करत इहाँ का पद से त्याग के राह चुनल जादे उचित समझलीं। एह कॉलेज में लगभग पाँच–छह साल आपन सेवा दिहलीं। वाराणसी में रहला गुने शौकिया एक– दूगो कॉलेजन में अध्यापन–कार्य करत रहलीं।

सन् 1977 ई. में डॉ. चेतन के झुकाव राँची के ओर हो गइल। दूर के एगो संबंधी (रिश्ता में चाचा) पहिले से राँची में रहत रहन। इहों के परिवार पहिलहीं से राँची में रहत रहे। एह चलते सन् 1980 ई. में पूरा तरे वाराणसी से राँची आ गइलीं आ इहवें स्वतंत्र रूप से साहित्य–साधना आ लेखन–कार्य का प्रति एकनिष्ठ भाव से समर्पित हो गइलीं। भोजपुरी, हिन्दी आ संस्कृत के पुस्तकन के लेखक, संपादन आ अनुवाद के उल्लेखनीय आ विशिष्ट कार्य अबहीं तक के अपना जीवन में पूरा करत अनेक सम्मान आ पुरस्कारन से सम्मानित आ अलंकृत होत रहल बानी।

विद्यानुरागी डॉ. चेतन जी अपना जिनिगी में अध्यवसायी आ जिज्ञासु प्रवृत्ति के बिलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहल बानीं। इहाँ के भोजपुरी में छपल प्रमुख मौलिक कृति बाड़ी स–उबियान (काव्य), गीत प गीत (गीत–संगह), नंद नंदन (प्रबंध काव्य), फूल गंगबरार के (गीत–संग्रह), दूधा गीत (बाल गीत), बिरहा विनोद लोकरंगी भोजपुरी के संस्कार गीत, सजग शहद के रंग आदि। हिन्दी में प्रकाशित कुछ प्रमुख मौलिक आ आलोचनात्मक कृतियन के नॉव बा–अटपटे, प्रेममयी शबरी, पंचामृत (भक्ति गीत संग्रह), ना मैं देखूँ और को, बिम्ब एवं प्रतीक महादेवी वर्मा एवं उनके गीत, कबीर : समय के साक्षी, यादों की जंजीरें, युग्मभूमि, उलगुलान की आग, महादेवी वर्मा के गीतों का शिल्प–विधान (समीक्षा) छायावाद का शैल्पिक विधान एक समीक्षा, अंगूठे का निशान, हिन्दी के चार शिखर : एक मूल्यांकन (आलोचना) निर्णय के तट पर आदि।

अनुवाद अपने आप में एगो विशिष्ट, विस्तारित आ श्रमसाध्य कार्य ह। एकरा से श्रेष्ठ साहित्य के अधिक विस्तार मिलेला आ पाठकवर्ग लाभान्वित हो पावेला। एहू दिशा में डॉ. चेतन के कार्य उल्लेखनीय बा। ऊहाँ का कन्नड़ भाषा के पचीस सौ वचनन के भोजपुरी में अनुवाद–कार्य क के अपना विशिष्ट मेधा –शक्ति के परिचय दिहलीं। साथ ही, डॉ. जे. जयरामन के द्वारा सात गो कहानियन के तमिल में अनुवाद कइलीं। अइसही संस्कृत साहित्य के अनेक श्रेष्ठ पुस्त. कन के भोजपुरी में अनुवाद कइली, जवना के नाँव बा– भोजपुरी रघुवंश (प्रथम पाँच सर्ग), भोजपुरी कुमार संभवम्, भोजपुरी गीत गोविन्दम्, आदि।

संपादन एगो अइसन कला ह जवना में दृष्टि सम्पन्नता के साथे प्रस्तुतीकरण के आपन खास महत्व होला। डॉ. चेतन जी के प्रयास एहू क्षेत्र में काफी सराहनीय आ रेघरियावे लायक बा। अनेक पुस्तक आ पत्र–पत्रिकन संपादन करि के इहाँ के अपना कौशलता के विवेकपूर्ण परिचय साहित्य प्रेमियन का सोझा रखले बानी। इहाँ के द्वारा संपादित पुस्तकन में उल्लेखनीय बा– प्रमाण, प्रवाह, शब्द–शब्द काव्यायनी एवं काम्यायनी, समकालीन अभिव्यक्ति, शब्द–गंध, प्यासा पनघट (गीत सं. कलन) आदि। इहाँ के सन् 1970 के दशक में भोजपुरी अनियतकालीन *सँझवत* के संपादन कइली, जवना के तीन गो अंक निकल सकल।

डॉ. चेतन के व्यक्तित्व आ रचनात्मक अवदानन के लेके समय पर विविध विद्वानन के सम्मति विविध रूपन में आवत रहला बा। 'प्रेममयी मीरा : क्रांतिकारी प्रेम साधिका पुस्तक के भूमिका में हजारी प्रसाद द्विवेदी के ई वक्तव्य द्रष्टव्य बा– "प्रेममयी मीरा क्रांतिकारी प्रेमसाधिका हरेराम त्रिपाठी चेतन की जन्मातारीय दैवी सम्पदा का निष्कर्ष है।" अइसही इहाँ के एगो निबंध 'ये परिचारिकाएँ' पढला का बाद आपन प्रतिक्रिया व्यक्त करत आचार्य विद्यानिवास मिश्र के ई वक्तव्य रेखांकित करे लायक बा– ''हरेराम जी में ललित निबंध के उर्वर बीज हैं।" इहाँ के सस्वर कविता–पाठ पर मुग्ध होत डॉ. सर्वदेव तिवारी राकेश के कहनाम रहे– "हरेराम के रूप में एक मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक कवि मुझे दीख पड़ता है जो साहित्य के लम्बे मैदान को उपजाऊ बना सकता है।"

सम्मान आ पुरस्कार कवनो भी व्यक्ति खातिर ओकरा मेधा, कुशाग्रता आ कौशलता के परिचायक होला। डॉ. चेतन जी अपना असाधारण साहित्यिक अवदानन के लेके जिनिगी में अनेक सम्मान आ पुरस्कारन से समय–समय पर विभिन्न सरकारी आ गैर सरकारी संस्थन के द्वारा सम्मानित आ पुरस्कृत होत रहल बानी। हिन्दी भाषा–साहित्य में

उत्कृष्ट योगदान (संपादन) खातिर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गाजियाबाद (उ.प्र.) सम्मानित कइलस त भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर अपना स्वर्ण जयंती के अवसर पर साहित्य के अनन्य साधक के रूप में सम्मानित कइलस। हिन्दी साहित्य में विशिष्ट योगदान के लेके झारखण्ड सरकार के कार्मिक, प्रशासनिक आ राजभाषा विभाग सम्मानित आ पुरस्कृत कइलस। कन्नड़ भाषा के बचनन के भोजपुरी अनुवाद खातिर 'विसव समिति' (बेंगलुरू) के द्वारा सन् 2016 ई. में सम्मानित भइनीं। विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, भागलपुर (बिहार) सन् 2021 ई. में 'विद्यावाचस्पति के उपाधि से सम्मानित कइलस।

एह तरे डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' एगो अइसन संवेदनशील सुधी साहित्यकार आ अध्येता हई जे समय के नब्ज के पहिचानत अपना सृजनशीलता के गति के बनवले रखले बानीं । एक साथे अनेक भषन के साधिकार सही आ ससमय उपयोग करत रहल बानीं। अपना जीवनकाल में अर्थ-प्राप्ति के ध्येय ना बना के साहित्यिक कर्मानुरागी बनल जादे पसंद कइलीं। कहलो जाला कि संघर्ष के डगर बड़ा कठिन होला, बाकिर अगर दिशा सही आ सकारात्मक होखे त ओकर परिणाम उचित फलदायी, मनभावन आ समाज में आदर आ मान-सम्मान दिआवेवाला होला। श्री चेतन जी अपना जिनिगी में एह मार्ग के अनुसरण करत आज सभकर प्रेरणास्रोत आ मार्गदर्शक के रूप में बानीं।

भोजपुरी भाषा, सांस्कृति आ साहित्य खातिर समर्पित अइसना व्यक्तित्व से सऊँसे भोजपुरिया समाज गौरवान्वित बा कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष आ अभिभावक के रूप में एगो नया दिशा आ मार्गदर्शन मिली।

❑❑

❍ द्वारा नागेन्द्र पंडित, ग्राम-बगहीं
बढैया टोला, पोस्ट-बैरिया
जिला- प. चम्पारण- 845438 (बिहार)

आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन के अमृत महोत्सव पर सनमान

गंगा प्रसाद अरुण

बहुत खुशी भइल ई जान के कि हिन्दी–भोजपुरी–संस्कृत के यशस्वी विद्वान आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन जी के अमृत महोत्सव पर एगो अभिनंदन–ग्रंथ के प्रकाशन योजना बनल बा। एह पुनीत यज्ञ में आपन शब्द–समिधा देत हमरा अपार खुशी के अनुभव हो रहल बा। 'चेतन' जी से आपन परिचय के पंथ ढूँढ़त हम साल 2005 के 24–25 दिसम्बर के जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के स्वर्ण– जयन्ती आयोजन तक पहुंच रहलबानी। एह ऐतिहासिक अवसर के धूम–धाम से मनावे के योजना बनल जवना में भोजपुरी के 5 गो स्थापित–प्रतिष्ठित सेवियन के सम्मानित करेके निर्णय लिहल गइल जवना में पटना के डॉ. नागेन्द्र प्रसाद सिंह आ प्रो0 ब्रजकिशोर, सासाराम के डॉ. नंदकिशोर तिवारी, राँची के आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' आ जमशेदपुर के डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' जी शामिल रहलीं। एह में से 5 गो विभूतियन से त हमार व्यक्तिगत परिचय रहे, बाकिर आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी से हम पूरा–पूरी अपरिचित रहलीं। चेतन जी के नाम आदरनीय डॉ. बच्चन पाठक सलिल जी सुझवले रहीं। एह कुल्हि महाविभूतियन के मान–पत्र हमहीं तइयार कइलीं जबकि वाचन अलग–अलग लोग कइल। इहे अवसर चेतन जी से बन्हाय के सूत्र भइल जवन कि दिनानुदिन बढ़त– विकसित–मजबूत होत गइल।

अगिला साल जमशेदपुर के दिनकर परिषद् (बिहार एसोसिएशन) के एगो कार्यक्रम के मुख्य–अतिथि–वक्ता रहलीं आचार्य 'चेतन' जी। कार्यक्रम के दोसरका दिने अचानके 'चेतन' जी के फोन आइल– 'रउरा से मिले के मन करत बा, हम रउरे इलाका 'हुडको लेक' के सुरम्य परिसर में डॉ. चन्द्रभूषण सिन्हा आ आउर लोग के साथे 'स्वर्गारोहण' पर बानी।' हम तनी मुस्कइलीं अपने आप में आ चुटकी लिहलीं– 'अबहियें स्वर्गारोहण पर काहे जी! अबहीं ढेरे कुछ करे–घरे के बा, हम आवत बानी।' ई कवनो अतवार के दिन रहे। हम घरहीं पर रहीं। अपना स्कूटर से पहुँच गईलीं हुडको डैम परिसर में। संग–साथ बड़ा जमल। फिर उहाँ सभे के इच्छा रहे कहीं बईठ के चाह पीये के। हम कहलीं– 'कतहूँ काहे, हमरे आवास पर चलल जाय, डिमना जाय के राहे में पड़ी। उहवें चाह–पानी हो जाई।' – फिर हम अपना स्कूटर से राह देखावत उहाँ सभे के अपना आवास पर ले अइलीं। जब तक 'चाह' तइयार हो खे, अनुकूल अवसर पाके तब दैनिक हिन्दुस्तान में छप रहल आपन दू–तीन गो भोजपुरी ललित लेख के वाचन कइलीं, जवन चेतन जी के बहुते नीक लागल। डॉ. सिन्हा जी त बहुते बड़ाई कइलीं– 'गंगा, बहुत दिन के बाद अतना खुल के हँसे के मौका मिलल। चाह–पानी के बाद चेतन जी के आग्रह पर हमहूँ एह समूह में शामिल हो डिमना पहुँच गइलीं। फिर त दिन भर के साहित्यिक गप्प–चरचा।

'चेतन' जी से आउर निकटतर भइलीं 2017 में प्रकाशित उहाँ के 'बिरहा–विनोद' खातिर बिरहा संचयन के क्रम में। एह संग्रह के आपन–बात – 'बिरहा पलक–प्रान के पुकार' के अंतिम परिच्छेद में उहाँ के लिखत बानीं– ''एह संकलन के पूरनाहुति में जमशेदपुर के यशस्वी कवि–गीतकार (हिंदी–भोजपुरी, दूनो के) श्री गंगा प्रसाद अरुण के छवि यादगार बनल रही, कि ऊ दस दिन में बैद्यनाथ पाण्डेय कोमल, मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), आपन आ आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के बिरहा भेज देले। उनुका एह पाहुर से 'बिरहा–विनोद' हष्ट–पुष्ट भइल। एह किताब के परसादी पेठावत उहाँ के लिखलीं– 'सुकवि, नवगीतकार, कुशल बिरहा लेखक, गायक गंगा प्रसाद अरुण को सप्रेम। (चेतन / 13.1.2017)

पता न, कब–कइसे–कहवाँ चेतन जी के दीठि में हमार ऊ गोपित डायरी आइल जवन कि उहाँ के आग्रह–अनुग्रह से पुस्तकाकार प्रकाशित भइल। हमरा संकोच के दू–गो कारन रहे, पहिला त

वर्ण्य–विषय आ दूसरा अर्थ–व्यवस्था। ओने चेतन जी के आग्रह–आदेश– 'एह अनछूवल अनमोल धरोहर से भोजपुरी के वंचित ना कइल जाय, जवन कि अपना आप में मौलिक–मानक–मारक आ अब तक के 'न भूतो, न भविष्यति' समान बा। अर्थ के चिंता मत करीं, हम कुल्ही देख लेब। उहाँ के एकर पीठिको लिखे के आश्वासन–वचन दिहले रहलीं एकर सम्पादकीय के रूप में, बाकिर ऐन वक्त पर अस्वस्थ–दुर्घटनाग्रस्त हो जाय के चलते ई हो न सकल। हम त एह बात के लगभग बिसारिये दिहले रहीं कि अचानके 19 नवम्बर 2020 के 'प्रेम न बाड़ी ऊपजै' शीर्षक से प्रकाशित एकर पुस्तककार 13 गो प्रति डाक से मिलल लेखकीय उपहार स्वरूप। हम अकचका गइलीं। स्पष्ट कर दीं कि बात लगभग 3–4 साल पूरान हो चुकल रहे आ एह किताब के शीर्षक– 'प्रेम न बाड़ी ऊपजै' हमार दिहल ना रहे। एह प्रकाशन के अर्थ–व्यवस्था 'चेतन' जी कइसे कइलीं, हमरा मालूम नइखे। एह किताब के प्रकाशन के चर्चा जब इतिहासकार डॉ. अर्जुन तिवारी जी प्रकाशन– प्रमुख राजदेव पाण्डेय जी से कइलीं, त उहाँ के प्रतिक्रिया रहे– प्रकाशन हम 'एकरा 'मेरिट' के आधार पर कइले बानी।

चेतन जी आपन अधिकांश प्रकाशित कृति उदारता पूर्वक हमरा लगे भेजलीं, जवना में प्रमुख बा– 1967 में (2011 तक 4 संस्करण) प्रकाशित काव्य–संकलन 'उबियान', 1998 में प्रकाशित (2011 में दूसरा संस्करण) गीत– संग्रह 'गीत प गीत', 2009 में प्रकाशित दू किताब (होरी–फगुआ–चइतादि के संकलन) 'माटी गावे गीत' आ सतसई से तनिके चूकल 622 भोजपुरी दोहा–संग्रह 'भीतर ऑत घुऑत बा', 2016 में प्रकाशित भजन–कीर्तन–तर्पण के सजल पुस्तक 'फूल गंगबरार के', 2017 में प्रकाशित 4 पुस्तक, काव्य–संग्रह 'हूलि दे पेशावर ले, मौसमी कजरी गीतन से सुवासित 'सावन के झींसी', हिन्दी काव्य–संकलन 'प्यासे समय की चीख' आ भोजपुरी दोल्हा–संकलन 'बिरहा–विनोद आदि प्रमुख बाड़ी स। एकरा अलावे इहाँ के' विरहिणी मीराः क्रान्तिकारी प्रेम–साधिका', 'मदालसा'–'प्रेम लपेटे अटपटे' – 'प्रेममयी शबरी (भक्ति–गीत)' – 'ना मैं देखूँ और को' – 'बिम्ब एवं प्रतीक', 'महादेवी वर्मा एवं उनके गीत', 'कबीरः समय के साक्ष्य', 'यादों की जंजीरें', 'युग्म भूमि', 'उलगुलान की आग' –जस हिन्दी–भोजपुरी के गद्य–पद्य ग्रंथ राउर कीर्ति के लहरात, घजा बाड़े स। अपना आचार्यत्व के सार्थक करत चेतन जी रघुवंश, कुमार संभव, गीत–गोविन्दादि जइसन श्रेष्ठ संस्कृत ग्रंथन के सुरूचिपूर्ण भोजपुरी–हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कइले बानीं। चेतन जी के 7 कहानियन के डॉ. जे. जयरामन द्वारा तमिल भाषा में अनुवाद भइल बा।

ललित लेखन के अलावे चेतन जी प्रमाण, प्रवाह, शब्द–शब्द, ऑतर, सँझवत, काव्यायिनी, समकालीन अभिव्यक्ति, शब्द–गंध, प्यासा पनघट जइसन भोजपुरी–हिन्दी के दर्जनाधिक पत्रिकन–पुस्तकन के यशस्वी संपादक रहल बानी। चेतन जी कवि–गद्यकार, समालोचक, संपादक, संगठन कर्ता रहल बानी। साँच कहल जाय त इहाँ के साहित्यिक विराटता के विविध आयाम कवनो छोट कैनवास पर उकेरल मुश्किल बा।

अपना घोषित जनम–तिथि के अनुसार चेतन जी हमरा से लगभग 5 बरीस जेठ बानी। उमिर के एह अंतर के कवनो जादे ना कहल जा सके। अभी त अपने के तहलका मचावे के बा साहित्य के रन–क्षेत्र में। अपने –सुदीर्धायु होईं आ हमरा अइसन अनुज पर असिरबाद के अमरित उड़ेलत शतायु होखीं। एह अमृत–महोत्सव पर 'अपने के हमरो उमिर लग जाय' आकांक्षा के साधे अभिनन्दन–ग्रंथ के प्रकाशन के शुभकामना का साथे सै–सै प्रणाम।

❑❑

❍ 21–बी, रोड–1न, जोन–4
बिरसानगर, जमशेदपुर – 831019

सरधा जोग चेतन जी के हार्दिक अभिनंदन

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'

करुणेश जी के हिन्दी मुक्तक के भोजपुरी अनुबाद से हम बात सुरु करे के चाहत बानी –

जे बीचे काँट में खिलके गमक आपन लुटावेला,
उहे बरगद बनेला बीज जे खुद के गलावेला।
मनुज के मान राखेला जे देला दान में हड्डी,
उहे जग में पूजल जाला उहे सम्मान पावेला।।

सरधा जोग डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन जी' के बानी, ब्यक्तित्व आ गढ़ल मानवीय मूल्यन से लबालब बहुविध साहित्यन के परायन के बाद लागल के अइसने ब्यक्तित्व आ चरित्र खातिर ई मुक्तक उतरल होई करुणेश जी पर। चेतन जी के जीवन ओह साधक आ साधु के जीवन बा, जवना खातिर गोस्वामी तुलसीदास जी अपना राम चरित मानस में लिखलें कि "साधु चरित सुभ चरित कपासु।" कपास के चरित अजीब होला। ओकरा धवल रूप के त दरसन सभे करेला। बाकिर ओकर सबसे बड़ गुन ई होला कि जे ओकरा के बिंधेला, गूँथेला आ काटे–छाँटेला, ओकरो के ऊ ढाँपेला–तोपेला आ एगो स्तर–ओहार देला आ तीसरे ओकरा में कवनो बिसय–बिकार के रस के लवलेस ना होखे। जे सूई का छेदाई के दुख सहके दोसरा के छेद–भेद ढँकेला आ दूर करेला, ओही गुन के कारन जग में जस पावे वाला चेतन जी जइसन सज्जन, संत, साधक, साहित्यकार आ आचार्य

वंदनीय होलन, अभिनंदनीय होलन–

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा।
वंदनीय जेहि जग जस पावा।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी आ बड़ भाई कनक किशोर जी से जइसे पता चलल कि साहित्य सेवी समाज के ओर से 'डॉ. हरेराम त्रिपाठी चेतन जी अभिनंदन ग्रंथ' के प्रकाशन हो रहल बा त हम आह्लादित हो उठनीं। ई पावन काम जरूर होखे के चाहीं। चेतन जी एगो कुशल आ समर्पित आचार्य आ साहित्यकार के रूप में आपन सउँसे जीवन अपना समीप आइल एक एक ब्यक्ति, समाज आ राष्ट्र के सजावे–बनावे में लगा दिहनीं। पचासी साल से ऊपर के जीवन–यात्रा कर चुकल साहित्य, ब्याकरन आ सांख्य दर्शन के अध्येता आचार्य चेतन जी से हमार परिचय कुछ बिलम्ब से भइल। छपरा वाला आचार्य विश्वनाथ शर्मा अपना पुस्तकालय खातिर पुस्तक के तलास करत जब चेतन जी के आवास पर पहुँचले आ इनका साहित्य संसार से परिचित भइलें त उहँवे से हमरा के फोन करके जानकारिए ना दिहलें, चेतन जी से बातो करवलें। पहिलके संबाद में हमनी अइसन घुल–मिल गइनीं कि फेर संबाद के सिलसिला बढ़त चल गइल।

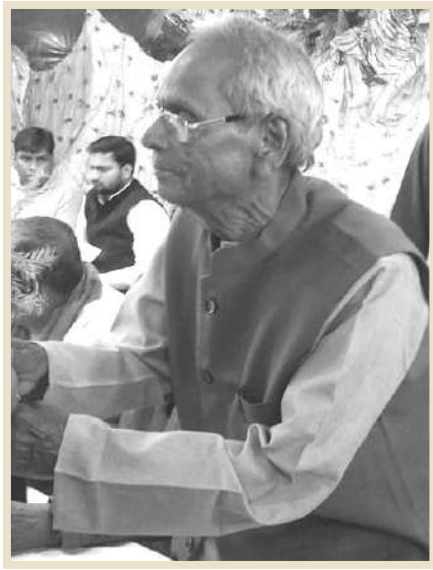

चेतन जी से आमने–सामने होके सुने–कहे के अवसर तब आइल जब 27 अक्टूबर, 2018 के हम अपना भोजपुरी विभाग, लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर में पं. गनेस चौबे जी के जयंती के अवसर पर भोजपुरी के नामचीन बयोबृद्ध कवि–गीतकार कविवर अनिरुद्ध जी के दू काव्य संग्रह 'गीतन के गांव में' आ 'बालकृष्ण गीतावली' का लोकार्पन के कार्यक्रम बनल आ लोकार्पन में मुख्य अतिथि के रूप में चेतन जी आ विशिष्ट अतिथि आदरनीय निरंजन श्रीवास्तव जी आ कामेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव निरंकुश जी के सङे सम्मिलित भइनीं। चेतन जी के बक्तव्य बहुते प्रभावी रहल।

एकरा बाद सोसल मीडिया, फेसबुक वगैरह के माध्यम से आपन–आपन बिचार आदान–प्रदान करे के क्रम चलत रहल। एही बीच सन् 2020 के मार्च में कोरोना महामारी के वजह से सउँसे देस में लाकडाउन लाग गइल आ हमनी सब भासा–साहित्य सेवी का फेसबुक के कई पेजन पर आनलाइन लाइव आवे के पड़ल। भोजपुरी मातृभाषा, भासा, साहित्य, संस्कृति आदि के लेके अनेक पेजन पर उद्बोधन के सिलसिला सुरु भइल। एही दरम्यान भोजपुरी के कई संतकवि लोग के जीवन, साहित्य आ दर्सन पर चेतन जी के सुने के अवसर मिल. ल। सम्बन्ध आउर गाढ़ होत गइल। एने आके उहाँके रचना संसार से अवगत भइला के बाद उहाँके पढ़े आ जाने में रूचि बढ़ गइल बा। उनका हिन्दी के प्रकाशित दर्जन से ऊपर के गुरु गंभीर शोधपरक आ मौलिक पुस्तकन के छोड़ियो दीं त इनका भोजपुरी में प्रकाशित पुस्तकन के सूची भी छोट नइखे। जवना में प्रमुख पुस्तक बाड़ें स– उबियान (संदेस काब्य), फूल गंगबरार के (भोजपुरी गीत संग्रह), गीत पर गीत (गीत संग्रह), हूलदे पेशावर ले (वीर रसात्मक काब्य), सावन के झींसी (कजरी गीत संग्रह), माटी गावे गीत (भोजपुरी फगुआ होरी रसिया, चैता संग्रह), भीतर आँत धुआँत बा (भोजपुरी दोहा संग्रह) आदि। अइसहीं अनुबाद साहित्यन में भोजपुरी कुमार संभव, भोजपुरी रघुवंश, भोजपुरी गीत गोविन्द आदि।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गाजियाबाद, जमशेदपुर के साहित्यिक संस्था काव्य लोक, भोजपुरी साहित्य परिषद आदि द्वारा सम्मानित एह महान संत सुभाव वाला साहित्यकार आचार्य के हमार हार्दिक अभिनन्दन। शत शत वंदन।

❑❑

❍ 'प्रताप भवन' महाराणा प्रताप नगर
मार्ग सं.–1 (सी), भिखनपुरा, मुजफ्फरपुर (बिहार)
मो.न.– 9430014688

चेतन जी के साहित्यिक चेतना आ अवदान

डॉ. अजय कुमार ओझा

बात सन् 2005 के ह। 'जमशेदपुर भेजुपरी साहित्य परिषद्' के स्वर्ण जयंती समारोह के तइयारी चलत रहे। भव्य कार्यक्रम के योजना बनलि रहे। जमशेदपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था तुलसी भवन के मुख्य सभागार बुक हो चुकल रहे। हमनी का ओ घरी तक हर साल परिषद् के सालाना जलसा के अवसर पर भोजपुरी जगत के कवनो नामचीन भोजपुरी सेवक/साहित्यकार के साहित्यिक सम्मान देत रहीं। अब बात रहे स्वर्ण जयंती वर्ष में ई सम्मान केकरा के दिआव? कार्यसमिति के बइठक में ई तय कइल गइल कि अबकी एह मौका पर भोजपुरी जगत के पाँच गो भोजपुरी साहित्य के उत्कृष्ट सेवक लोग के ई सम्मान प्रदान कइल जाव। अब एह पाँच गो नाम खातिर माथा पच्ची होत रहे। चार गो नाम लगभग तय हो चुकल रहे – (1) श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह (पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन) (2) डॉ. नन्द किशोर तिवारी (भोजपुरी के वयोवृद्ध प्रकाण्ड विद्वान) (3) डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' (भोजपुरी के ख्यातिलब्ध विद्वान आ परिषद् के पूर्व प्रधान सचिव) (4) प्रो0 ब्रज किशोर (पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन)। एही बीच तत्कालीन प्रवर समिति के सदस्य रहलें– राँची के आचार्य डॉ. हरे राम त्रिपाठी 'चेतन'। एह नाम से सभे परिचित ना रहे। तब 'सलिल' जी इहां के विद्वता, भोजपुरी का प्रति निष्ठा आ योगदान पर ढेर कुछ बतवलीं, जवना के सभे स्वीकार कइल। अब हमनी के पाँचों सम्मानित अतिथि लोग के नाम तय हो गइल।

परिषद् के स्वर्ण जयंती समारोह के दू दिवसीय (24.25 दिसम्बर 2005) कार्यक्रम खातिर तुलसी भवन सभागार सज धज के तइयार रहे। कार्यक्रम शुरू होखे के पूर्व शहर आ शहर के बाहर से आइल अतिथि लोग सभागर के पहिलकी पांति में बइठल रहे। ओही घरी हम परिषद् प्रधान सचिव होखे के नाते, सारा व्यवस्था देखला का बादे अतिथि लोग से औपचारिक स्वागत–भेंट करे ओहिजा पहुँच के मिले लगलीं। तीन–चार लोग से मिलला के बादे डॉ. सलिल जी बइठल

रहीं। हम झूकि के उहां के चरण–स्पर्श कइली, तले उहां का उठि के खड़ा भइली आ हमरा से, अपना बगल में बइठल व्यक्ति के आचार्य डॉ. हरे राम त्रिपाठी 'चेतन' जी से परिचय करवलीं। औपचारिक प्रणामा पाति भइल। 'चेतन' जी के देखत आ 'सलिल' जी के परिचय कराते हमरा मन में अचानके आइल कि अरे, जइसन सोचले रहीं हु–ब–हू ओइसने दर्शन भइल। एकदम आकर्षक आ गम्भीर व्यक्तित्व, सौम्य चेहरा, धवल खादी के धोती, गरम कुर्ता आ बंडी पहिरले, लंबा केश, चौड़ा ललाट देखते विद्वता के झलक मिल गइल। कार्यक्रम के दौरान इहाँ के उद्‌बोधन हमरे ना ओहिजा उपस्थित ढेर लोगन के मने भावल आयोजन के कई दिन बाद ले इहां के उद्‌भट विद्वान आ वक्ता का रूप में चर्चा होत रहलि। निश्चित रूप से हमनी का अपना एह पाँचों अतिथि लोग के स्वर्ण जयंती सम्मान देके संतुष्ट रहीं।

'चेतन' जी के माझिल लइका श्री दिव्येन्दु त्रिपाठी एहिजे जमशेदपुर के मानगो में ही रहिलें। 'चेतन' जी ओहिजे ठहरल रहीं। हम त ना बाकिर परिषद् के तत्कालीन संगठन सचिव मानगो निवासी आदरणीय भइया श्री दिलीप ओझा जी से इहां के सम्पर्क बढ़ल। जेकरा माध्यम से हमरो 'चेतन' जी से नजदीकी बढ़ल। हम इहां के परिषद् द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तक आ आपन पत्रिका 'निर्भीक संदेश' के कुछ अंक भेंट स्वरूप दीहलीं। बाद में इहाँ का राँची से पत्रिका में प्रकाशनार्थ आपन कुछ रचना भेजले रहीं। हमहूँ इहाँ के पत्रिका के दूगो अंक 6 आ 7 में सम्मान स्वरूप सम्पादक मंडल में स्थान दिहलीं।

एकरा बाद त इहां से प्रभावित तुलसी भवन आपन वार्षिक आयोजन 'युवा रचनाकार' कार्यक्रम में काव्य विधा पर वक्तव्य खातिर अतिथि रूप में आमंत्रित कइलसि। धीरे–धीरे इहां का जमशेदपुर के आपन होत गइलीं। एही दरम्यान आचार्य 'चेतन' जी के बारे में खास कके इहां के साहित्यिक उपलब्धियन के जाने–समझे के मौका मिलल। भोजपुरी–हिन्दी आ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, मातृभाषा भोजपुरी के समर्पित सेवक 'चेतन' जी, हिन्दी से एम0ए0 कइला का बाद संस्कृत साहित्य, व्याकरण आ सांख्य दर्शन में आचार्य के उपाधि प्राप्त कइलीं। इहां के हिन्दी आ भोजपुरी में अलग–अलग विधा के अनेक पुस्तक प्रकाशित बाड़ी स, जवना में प्रमुख बा – 'विरहिणी

मीरा' (क्रान्तिकारी प्रेम साधिका), 'मदालसा', 'प्रेम लपेटे–अटपटे', 'प्रेममयी शबरी' (खण्ड काव्य), 'ना मैं देखूँ और को' (कबीर साहित्य समीक्षा), 'बिम्ब एवं प्रतीक' – छायावाद का शैल्पिक विधान (समीक्षा), 'महादेवी वर्मा एवं उनके गीत' (समीक्षा), 'निर्णय के तट पर' (हिन्दी काव्य संग्रह), 'उबियान' (भोजपुरी खण्ड काव्य), 'फूल गंगबरार के' (भोजपुरी गीत संग्रह), 'गीत प गीत' (भोजपुरी गीत संग्रह), 'सावन के झींसी' (एक सौ एक कजरी गीतों का संग्रह), 'हूलि दे पेशावर ले' (भोजपुरी कविता संग्रह), 'भोजपुरी रघुवंश' (अनुवाद), 'माटी गावे गीत' (भोजपुरी के बसंत, फगुआ आ चइता संग्रह), 'भोजपुरी कुमार संभव' (अनुवाद), 'भोजपुरी गीत गोविन्द' (अनुवाद), 'भीतर आँत धुआँत बा' (भोजपुरी दोहा संग्रह), 'नन्द नन्दन' (भोजपुरी खण्ड काव्य) वगैरह।

पुस्तक लेखन आ प्रकाशन के अलावे आचार्य 'चेतन' जी सम्पादन के क्षेत्र में भी अग्रणी बानी।

इहां के सम्पादित पत्रिकन आ पुस्तकन में प्रमुख बा–'प्रमाण', 'प्रवाह', 'शब्द–शब्द', 'आँतर', 'सँझवत', 'काव्यायनी', 'समकालीन अभिव्यक्ति' पत्रिका आ 'शब्दगंध', 'प्यासा पनघट', 'लोकगन्धी भोजपुरी के संस्कार गीत' वोगैरह। सन् 2015 में भगवान बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व पर आधारित इहाँ के प्रबंध काव्य 'उलगुलान की आग' के विमोचन एहिजे तुलसी भवन में डॉ. 'सलिल' जी के अध्यक्षता में भइल। एकरा बाद त प्रायः छोट–बड़ कार्यक्रमन में 'चेतन' जी के उपस्थिति तुलसी भवन में होते रहल बा।

असहीं एक बेर 10 फरवरी 2019 के आदरणीय 'चेतन' जी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'लोकगन्धी भोजपुरी के संस्कार गीत' के लोकार्पण 'जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्'– के बैनर तले परिषद् के तत्कालीन कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. नर्मदेश्वर पाण्डेय जी के अध्य क्षता में भइल। कार्यक्रम के बाद 'चेतन' जी ओहिजा उपस्थित अपना पुत्र श्री दिव्येन्दु त्रिपाठी, पुत्री श्रीमती माधवी उपाध्याय, दमाद श्री सुनिल उपाध्याय, नाती आ नतिनी से हमनी के मिलववलीं। उहाँका, बेटी माधवी के साहित्यिक अभिरुचि के चर्चा करत तुलसी भवन के साप्ताहिक कार्यक्रमन में शामिल होखे के बात कहलीं। ओहिजा उपस्थिति साहित्य समिति के प्रमुख भी एह बात के समर्थन कइलें। कुछे दिन बाद 'चेतन' जी के पुत्री श्रीमती माधवी उपाध्याय के तुलसी भवन आना–जाना शुरू भइल। पिता के संस्कार में पलल–बढ़ल माधवी पहिले से ही एगो अच्छा रचनाकार रही बाकिर तुलसी भवन से जुड़ला का बाद इन्हिका काव्यात्मकता के स्थायीत्व आ एगो नया दिशा मिलल। देखते–देखते इन्हिका के तुलसी भवन के साहित्य समिति में कार्यकारिणी सदस्य आ 'जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्' के संयुक्त सचिव का रूप में शामिल क लिहल गइल। आजु नगर में माधवी एगो ख्यातिलब्ध कवयित्री का रूप में प्रतिष्ठित बाड़ी। इन्हिकर पहिलका काव्य संग्रह 'अनुपल गाता गीत पपीहा' प्रकाशित हो चुकल बा। पुत्र दिव्येन्दु त्रिपाठी, जमशेदपुर में ही सुप्रसिद्धवास्तुविद् बाड़ें। फिलहाल एस्ट्रोएडवाइजर, अध्यापन आ विभिन्न विषयन में सवतंत्र रूप से अनुसंधान–कार्य में संलग्न बाड़े। इन्हिको वास्तुशास्त्र पर एगो प्रमाणिक पुस्तक 'व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक वास्तुशास्त्र' प्रकाशित हो चुकल बा।

एही बीच माधवी जी से हम बातचीत का क्रम में आदरणीय 'चेतन' जी के व्यक्तित्व के बारे में जाने खातिर इच्छा जाहिर कइलीं त ऊ बचपन से लेके अपना विवाह के पूर्व तक के कई गो छोट–बड़ घटनन के बारे में बतवली। जवना के आधार प हम एह निष्कर्ष प पहुँचली कि आदरणीय 'चेतन' जी हिन्दी–भोजपुरी–संस्कृत के विद्वान साहित्यकार के अलावे एगो अनुशासन प्रिय अभिभावको रहल बानी। जवना के नतीजा ई बा कि उहां के सब पुत्र–पुत्री आज उच्च शिक्षा प्राप्त कके साहित्य के क्षेत्र में निर्बाध गति से आगे बढ़ रहल बाड़े।

अइसन साहित्य मनीषी, उद्भट विद्वान आ मातृभाषा के अनन्य सेवक आदरणीय आचार्य डॉ. हरे राम त्रिपाठी 'चेतन' जी के एह अमृत महोत्सव के अवसर पर हम ईश्वर से प्रार्थना कर रहल बानी कि इहां का स्वस्थ आ दीर्घायु होखीं आ मातृभाषा भोजपुरी के भंडार भरत रहीं। अंत में,

शीश झुकाईं हम करीं, रउरा के प्रणाम।
माई भाषा के सपुत, 'चेतन' बा उपनाम।।

❑❑

❍ प्रधान सचिव
जमदेशपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्
होल्डिंग नं0–102, जोन नं0–11
बिरसानगर, जमशेदपुर–831019, झारखंड

डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' से दिलीप कुमार के बातचीत

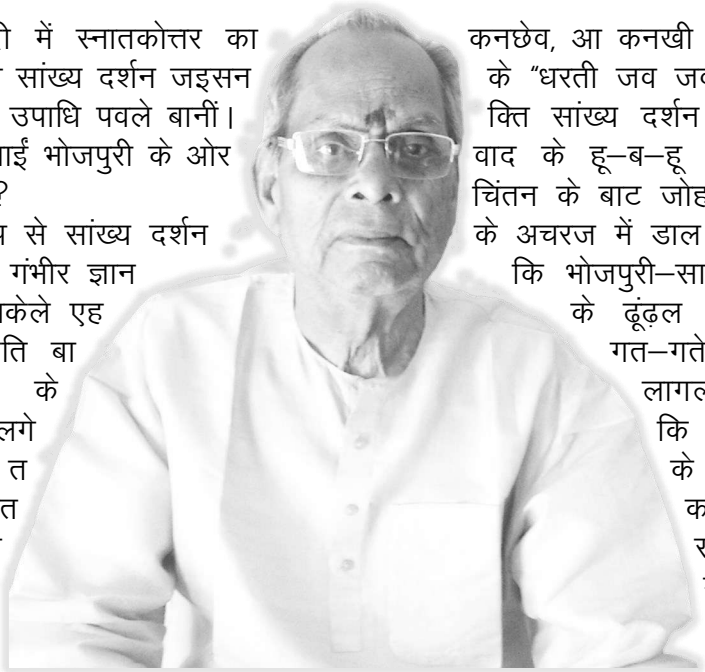

सवाल– रउआ हिंदी में स्नातकोत्तर का बादो संस्कृत, व्याकरण आ सांख्य दर्शन जइसन गूढ़ विषयन में आचार्य के उपाधि पवले बानीं। फेनु रचनाधर्मिता के दिसाईं भोजपुरी के ओर झुकाव के का वजह रहल?

जबाब– निश्चित रूप से सांख्य दर्शन आ समूचा संस्कृतवाङ्मय गंभीर ज्ञान के कोश बा। विश्व में अकेले एह भाषा–साहित्य में ई कूबति बा कि नया–नया शब्दन के निर्माण कइ देले। एकरा लगे अकूत शब्दन के वैभव त बड़ले बा संगे संगे अद्भुत दर्शन के सुचिन्तित निष्कर्षो बा जवन मानव–जीवन गढ़े में आ सृष्टि के सत्य के समझे में सहायक रहल बा। त, हमरा ललक ई पैदा भइल कि ई निधि हमरा माई भाषा–साहित्यो में आओ। एह दिशाई काम अनुवाद से शुरू कइनी। कुछ रघुवंश के, कुछ कुमार संभव आ गीत गोविंद के अनुवाद कइबो कइनी। एह सिलसिला में संस्कृत के एगो अवरु विशेषता लउकल कि ओह में जवन कवि–चाहे कालिदास, चाहे भास माघ, भारवि –जब काव्य रचताड़ें त ओमें सांख्य दर्शन, वैशेषिक दर्शन, न्याय आ वेदांत के तत्व के उदाहरण में सामिल करता रचताड़ें। अब एह दिसाईं इची उजुग– सजग होके जब अपना भोजपुरी ओरि निहारे लगनी त लउकल कि संस्कृत के दार्शनिक कन भोजपुरी में भरल बा। जइसे न्यायदर्शन में घट –पट प विचार करल गइल बा। एने ताकीं त भोजपुरी में न्याय के घट घइला, घरिला, घइली, के रूप में आसन जमवले बा– ''कहँवा के सोनरा गढ़ेला घरिलवा ए रामा।" भा "भरल जमुनवां घरिलवा ना डूबे ए रामा।" "घरिला गढ़ेला कहां बइठि के कवन ए रूपवा आकार।" असही वैशेषिक दर्शन के "कण" भोजपुरी में "कन" के रूप में पद्मासन लगवले बा। कनक कन, कनकट, अन–कन कनछेव, आ कनखी के रूप में। भोजपुरी के "धरती जव जव आगरि" के लोकोक्ति सांख्य दर्शन के प्रकृति परिणाम वाद के हू–ब–हू रूप होके दार्शनिक चिंतन के बाट जोहता। ई कुल्हि हमरा के अचरज में डाल देलसि आ बुझाइल कि भोजपुरी–सागर में एह रतनन्हि के ढूंढ़ल जरूरी बा। विचार गत–गते गहराई में उतरे लागल। अखेयान कइनी कि "अनन्त व्रत में, कथा के आखिर में एगो कठवत पानी भरि के सोंपारी आ पइसा डालिके व्रती लोग आ आचार्य में एगो संवाद होला–

आचार्य– का ढूंढ़तार?
व्रती लोग– छीर समुन्दर।
आचार्य– पावेल का?
व्रती लोग– अनन्त फल।
आचायः– मिलल?
व्रती लोग– हं मिलल।
आचार्य– माथे चढ़ाव।

अब व्रती लोग अपना सिर पर ओह जल के माथ प छिरिकेला लोग।

अनन्तफल "सत्य के प्राप्ति" हउवे। एकर माने कि भोजपुरी में भारतीय दर्शन के कतुना सरल तरीका से समुझावल बुझावल बा!!! ए सब से हमरा बुझाइल कि संस्कृत में लिखबि–पढ़बि त दसगो संस्कृते के जानकार नू सुनिहें–पढ़िहें। आ एने सभ समय, दुख–सुख में, बारहो महीना घरे–दुवारे दिन–राति भोजपुरिए बोले के बा। त काहे ना भारतीय दर्शन के भोजपुरी में उकेरल जाउ। एही गुनन मन्थन के फूल भइल कि हम ''फल गंगबरार'' के रचना कइनी। एह में शाक्त दर्शन के गहराई से सोंचले बानी।

सवाल– हिंदी आ भोजपुरी में राउर समान गति बा। रउरा लेखन से शुरुआत कवना भाषा के भइल? अपना रचनाधर्मिता से पाठकन के बतावे के कृपा कइल जाव।

जबाब– घर–परिवार के माहौल संस्कार आ शिक्षा –सम्पन्न रहे। सांझ–सबेरे जब सभलोग अहथिराह बइठे त कवनो ना कवनो विषय प चरचा होखे। कबो संस्कृत में कबो हिन्दी में। कवनो बतकही के अध्याय भोजपुरी में लागत रहे। एगो रहनि वैकुंठ त्रिपाठी। ऊ बीएचयू से सन्–1937–39 में आयुर्वेद से आचार्य रहनि। एक दिन सांझ वाली गोष्ठी में ऊ प्रश्न कइले कि रोज–रोज के बातचित अन्त भोजपुरिए में होता त सभसे सेसर भाषा त आपन भोजपुरिए नू भइलि। सभे एकर समरथन कइल। एह निर्णय के हमरा पर असर परल। ओह घरी हम छठवीं कक्षा के विद्यार्थी रहीं। सन– 1939 में बड़का भैया के एगो किताब "गंवई गीत" मुजफ्फरपुर से छपल रहे। ओ में उहां के आपन गुरुवन्दना भोजपुरी दोहा में कइले रहीं। ऊ दोहा रहे–

रामकृष्ण गुरु देव के, चरनकंज के धूरि।
उदयकरण से अबल के, आजु करे दुख दूरि।।

एक दिन मकई के खेत में मचानि प बइठि के रखवारी करत रहीं। मन में उमंग जागल कि हमरो कविता लिखे के चाहीं। चिठ्ठीपत्री खातिर केहू मांगि दी त देबे के परि जाई। बड़ा मेहनत से हमहू आपन पता एगो दोहा में लिखनी –

शाहाबाद जनम भइल, चारघाट ह गांव।
गंगातट प, डाकघर हवे गंज उमरांव।।
बिहिया बाटे परगना, तीनि कोस पर दूर।
शाहपुर थाना जवन पहिल गांव मसहूर।।

बस बूझीं कि हमार कविता लिखे के श्रीगणेश भोजपुरी के एही दू दोहा से भइल। जवन आजुले चलि रहल बा।

सवाल– अपने बिहार के भोजपुर जिला के बिहिया से, लेकिन अब रांची (झारखंड) में आपन स्थायीं घर बना के निवास करीले। झारखण्ड सरकार में राजभाषा विभाग से काफी नजदीक से जुडाव रहल बा। झार खण्ड में भोजपुरी भाषा, संस्कृति, साहित्य आ आंदोलन के तत्परता आउर सरकारी स्तर पर एकरा संरक्षण का बारे में तनी विस्तार से बतावल जाव।

जबाब– हम झारखंड के रांची में, मोराबादी मुहल्ला में सन्–1976 से बानी। शुरुआती दौर में त इहे ना बुझात रहे कि एजियां स्थानीय जनजातीय भषनि के धुअंतु घटाटोप में भोजपुरी आ भोजपुरी भाषा भासी लोग कहां केने बा। हम चुपचाप अपना के अकसरुआ जानि के लिखत पढ़त रहीं। तबले ना हमार पहुंच हिन्दिए के कवनो विद्वान से भइल रहे आ ना संस्कृ ते/भोजपुरी के कवनो मनई से। प्रमण्डलीय राजभाषा विभाग के ओरि से एगो दूबे जी सुबहे हमार पता–टोह लेत आ गाइले। ऊ बिहिया के पास के दुबवली के रहन। 14 सितम्बर के हिन्दी–दिवस के कवि गोष्ठी खातिर नेवता देले। हम ओह अवसर के आपन भाग–प्रारबध मानि के चलि गइनी। ओह गोष्ठी के परम फल के रूप में राजभाषा के उपनिदेशक श्री भैरवनाथ पाण्डेय जी के पवनी। रांची से पहिले उहां का पटना राजभाषा आ भोजपुरी एकेडमी में सेवा दे चुकल रहीं। दूनो आदमी के बुझाइल कि "इहे परमफल इहे बड़ाई।"

दूगो दुखी भोजपुरी भाषा–बिरही मिलि के आपन आपन दुख रोवनी–गवनीजा। उहां के सम्पक्र में बलिया के एगो ए.डी.एम. अक्षयवर नाथ मिश्र जी रहीं आ एगो मोतिहारी के श्रीजगदीश तिवारी जे क्षेत्रीय अभिलेखागार में निदेशक रहीं। अब हमनी का "चतुर्ब्रह्म चतुर्व्यूह पवित्रं मंगलम् परम्" हो गइनी जा। हमरे मोराबादी स्थित कुटी में भोजपुरी कविगोष्ठी जमे लागलि। पुआ/पुड़ी/बारा चले आ पाण्डेय जी खतिर भांग के गोला के इन्तजाम राखे के परत रहे।

पाण्डेय जी हातमा में डी.एन.मिश्रा जे छपरा के निवासी रहन, उनुके घर में किराया प रहत रहीं। मिश्रजी भोजपुरी के अनुरागी आ अभियन्ता रहले। अब अतवार के अतवार ओहिजा जूटींजा कवि गोष्ठी आ कचराकूटि होखे। ए तरी हमनी के संख्या बढ़े लागल, भोजपुरी साहित्य के वातावरण मजगर बने लागल। ई फैलाव के सिलसिला पचास के गिनती तक पहुंच गइल सन् 1999 तक। एक दिन हमरे किहां जुटान रहे। नवरात्र के आस पास। पाण्डेय जी खुशखबरी सुनवनी कि भोजपुरी के नउवां राष्ट्रीय अधिवेशन रांचिए में होखे जा रहल बा।

ई सूचना पाण्डेय कपिल जी के जरिए उहां के मिलल रहे। श्री भैरवनाथ पाण्डेय जी के मुंह "भोजपुरी के राष्ट्रीय नौवां अधिवेशन रांचिए में होखी "सुनि के सभके चेहरा प खुशी के चमक आ गइल। एगो वातावरण जोरदार बनल। सभ में जोश जागल, सभे उत्साहित भइल–सहजोग दिहल। सम्मेलन के पहिलके दिन, दिने में पाण्डेय जी हमरा के संगे लेके अपर बाजार, भीमराज मोदी धर्मशाला में गइले। सभसे हमार परिचय पाती करवले। उहां के त सभ केहू जानत रहे। पाण्डेय कपिल जी से उहां का पहिलही हमरा विषय में बता चुकल रहीं। जब पहिला दिन सम्मेलन शुरू होखे के इची पहिलहीं हम पहुंचनी त पाण्डेय कपिल जी आगे बढ़िके प्रणाम कइलीं आ तुरते विशिष्ट अतिथि वाला वैच अपना हाथे लगा देनी आ ले जा के अगिली पांति में कुर्सी पर बइठा देनी। अगिलिए पांति में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी आदि लोग बइठल रहे। ई सम्मेलन रांचिए के ना बलुक पूरा झारखंड के भोजपुरिया समाज में जान डालि देलसि। प्रिन्टमिडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सभे प भोजपुरी सम्मेलन के चटकार रंग चढ़ि गइल रहे। अइसन माहोल बनि गइल रहे कि बुझाइल अब भोजपुरी भाषा–साहित्य के काम जोर सोर से एहिजो होई। बाकिर ऊ गरमी कुछुए दिन में बरफ जइसन ठंढा हो गइल। तवना घरी झारखण्ड प्रदेश ना बनल रहे, छोटा नागपुर कहात रहे आ बिहारे में रहे।

सन्–2000 में झारखंड प्रदेश बनल। भोजपुरिया समाज ओसही गाढ नीनि में सुतल रहे। गहमागहमी खाली झारखंड के क्षेत्रीय भषनि के मान्यता के रहे। एने चालाक मैथिली भाषी समाज चुप चाप आपन संगठित गतिविधि चलावत रहल। ऊ लोग इहां "मैथि. ली एकेडमी" बना के आगे बढत रहल लोग। भैरवनाथ पाण्डेय जी इहां से विदा होके पटना जा चुकल रहीं। फेरु हम अकेला परि गइनी। बहुत गुनन मन्थन के बाद "एकला चलो" के राह चूनि के एगो भोजपुरी के संस्था "फुही–फुही" के नेंव जतनीं आ रजिस्ट्रेशन करा लेनी, सन् 1998 में। सोचनी कि कम से कम साल में एगो बड़हन कार्यक्रम होत रही त कुछ लोग जुड़बे करी। लगातार दस बरिसले बड़े बड़े समारोह करवनी। एह संस्था के रांचिए में चारगो शाखा खोलनी। एगो अपना निवास पर, दुसरका इन्द्रपुरी मुहल्ला में, तीसरका गाड़ीखाना में आ चउथका पटेलनगर, हटिया में। पांचवां शाखा हरिहरगंज में जवन झारखंड के पछिमी उतरी छोर पर औरंगाबाद के लगे बा। मृगेंद्र प्रताप सिंह वित्तमंत्री, झारखंड सरकार, सीपी सिंह, मुख्य सचेतक आ बाद में विधान सभाध्यक्ष, पशुपति नाथ सिंह, मंत्री झारखंड प्रदेश, जइसन नामी–गिरामी लोग के मु ख्य अतिथि, बना–बना के गोहार लगवनी कुछु लाभ ना भइल। हमार लेखन आ संस्था के गति. विधि चलत–चलत लड़खड़ाए लागल। अब हमरो बुझाइल कि अकेले चना भांड़ ना फोरि सके।।

झारखंड में भोजपुरी खातिर शुरूवे से समर्पित भाव से सक्रिय रहल। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद एकर श्रेय आदरणीय निर्भीक जी, डॉ. बच्चन पाठक सलिल जी, डॉ. चन्द्रभूषण सिन्हा जी के दिहल जाई। बाकिर ओहिजो गुटबाजी चरम प बा। काम कम अहं सिरिजना जादे होता। दोसरका केन्द्र बोकारो बा। ओहिजो काम होता।

राजभाषा, झारखंड प्रदेश सरकार से हमार रचनात्मक नजदीकी जरुर बा आ राजभाषा विभाग में हिन्दी साहित्य कारन के सम्मान समिति में एगो सदस्यो रहनी लेकिन भोजपुरी के उहां कवनो जगहि नइखे। इहां त एहिजे के भषनि के मान्यता के झउरा नइखे ओरियात। भोजपुरी समाज के आ भोजपुरी भाषा साहित्य के इहे करुन गाथा बा। मैथिली द्वितीय राजभाषा के दर्जा मिल चुकल बा। ओह लोग के एकेडमियों सक्रिय बिया।

सवाल– पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण भोजपुरी लोकसंस्कृति पर गहिर आघात भइल बा। रउआ कइसन महसूस करतानी?

जबाब– लोक संस्कृति सामाजिक जीवन के रक्षा–कवच होला–ओसही जइसे धरती खातिर ओजोन परत। जइसे आजु ओजोन परत में छेद भइला से जलवायु प, मौसम आ तापमान प बुरा असर परि रहल बा ओइसही पश्चिमी सभ्यता आ साहित्य के जबून असर लोक संस्कृति प परल बा। पछिमाहा लोग हमरा लोक–संस्कृति के हीन नजरि से देखल आ ओइसने व्याख्या कइल लोग आ ऊ हमनी के आछा लागल। एहिजे से हमनी के पांव खाला परे लागल। हमनी के आपन कुल्हिए चीज बुरा लागे लागल। खान–पान, पहनावा–ओढ़ावा, शिक्षा–दीक्षा सभ पछिमें वाला

रुचे लागल। साहित्यो में पछिमहा रोग घुसि गइल। कविता, कहानी, उपन्यास, समीक्षा चारो ओर पछेया असर। अतने ना अरबी, फारसी से आइल गज़ल उर्दू के जरिए हमनी किहां पहुंच बना लेलसि। हिन्दी आ भोजपुरी में ग़ज़ल (गजल) लिखाए लागल–अल्ला, खुदा के अजान बोलाए लागल। एह समूचा प्रदूषन के असर हमनी के लोक संस्कृति के तुरलसि– भंगलसि। आजु हमनीका अपना भोजपुरी लोक संस्कृति में कहां सांस लेत बानी जा? ऊ भुजुना, डाली आ गमछी के झोरी भुजुना कहां बा? परबि–तेवहार के ऊ अमनियां भाव, ऊ गीतन के भावाकुलता कहां बा? ऊ आपसी नेम–प्रेम कहां बा? ई सभ कुछ पछिमी आन्हीं–बउस में उधिया गइल। ई दुख कहले ओराए लायक नइखे।

सवाल– रउआ काव्य–रचनन में भोजपुरी लोक संस्कृति के गहिर छाप देखे के मिलेला। ओइसे त अब लोकसाहित्य किताबन में ही संरक्षित बा। का एकर पुनर्जीवन सम्भव बा?

जबाब– व्यक्ति–साहित्यकार जब अपने धरकच के व्यापार के गझिन जाल में बन्हाइके लोक–निष्ठा आ लोक के संगे आपन घनाहि तूरि ली त ओकरा भीतर के सच्चा आदमी मरि जाई। साहित्य के, काव्य के लोक–भूंइ से हमेशा जुड़ल रहे के चाहीं। साहित्य लोक–संस्कृति के परिछाहीं होला। ओकरा में लोक–जीवन आ लोक–संस्कृति धड़कन चलत रहेला। हम आजु तिरासी बरिस के उमिरि तक गांव जी रहल बानी, गंगाजी में जी रहल बानी, चीक्का–बांडीं, फनाति, गुल्लीडंटा, दोल्हापाती, खीरकोंई, गांव के गवनई, परब–तेवहार, हित–नाता, धूरि–अखड़ा, बाग–बगइचा, खेत–बधारि, नाद–चरन, जी रहल बानी। गांवे जाईंले आरा भा बिहिएं से परिवार, खेत–खरिहान, गहुम, बूंट, जौ–जनेरा, धान–चाउर, आ दही –दूध जिए लागींले। बाकिर महीना दिन गांवे रहिके जब रांची आईंले तब पांच महीना लागिजाला पचीस प्रतिशत रांची जिए में।

एसे हमरा संउसे रचना संसार में लोक आ लोक संस्कृति बा। रहि गइल फेरु ऊ लोक संस्कृति आई कि ना, त हमरा नजरि में ऊ कहूं गइल नइखे, भुला गइल बानींजा, भुलात चलि जात बानींजा। बाकिर साहित्य में अगर बडुवे, साहित्य ओके संगोरि के रखले बा त इयादि करादीं। एसे साहित्य के माथे लमहर जिमवारी बा।

सवाल– भोजपुरी गीतन पर अश्लीलता के आरोप लगावल जाला। श्लीलता आ अश्लीलता के बीच का अंतर होला? अपने का समझ से एकर का निदान हो सकेला, खासकर के भोजपुरी के संदर्भ में।

जबाब– सबसे पहिले ''श्लील'' शब्द के अरथ जानल जरुरी बा। श्लील शब्द के व्युत्पति श्री–लच् प्रत्यय से ''पृषोदरादित्यः पाणिनि सूत्र से सिद्ध होता। एकरा अनुसार अरथ भइल, भाग्यशाली, धनीमानी, समृद्ध'' श्रीलः श्रीद– श्रीशः ''। आ एगो अरथ भइल 'शिष्ट' एकरा के उलटा करबि त भाग्यहीन, गरीब, आ अशिष्ट। अब एही व्युत्पति के अंजोर में देखीजा त अरथ साफ साफ लऊकि जाई।

भोजपुरी के ऊपर अश्लीलता को पांक फेंकेवाला सभसे आगे मैथिली भाषी लोग बा। भोजपुरी भाषा–साहित्य गरीब नइखे–जनसंख्या के नजर से, शब्द–सम्पदा के दिसाई, लोकगीतन के माने में, आ लखितो साहित्य के मैदान में। दोसर बात कि भोजपुरी भाग्यशाली भाषा बिया कि एकर लायक आ जोग 20–25 करोड संतान बा। रहि गइल शिष्टता–आ अशिष्टता के बात त अखेयान करे लायक विषय बा कि भारतीय भषनि के जननी संस्कृत अश्लिलता से भरल बा –

"जधानोन्नत पीवरस्तनी"
"इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्त कुंभा,
कुसुमृभारुणं चारु देहं वसाना।
लवंगी कुरंगी मदंगी करोतु।।"
"रमय मया सह मदन मनोरथ"
"कृत परिरम्भण चुम्बनया परिरम्भ
कृताधरपानम्।।"

एह तरे के हजारों प्रमाण अश्लीलता के संस्कृत आउर प्राकृत साहित्य में भरल पड़ल बा। बंगाल के वरेण्य विद्वानन के बड़ा नाज बा चण्डीदास के कृष्णकाव्य ''गाथा सप्तशती'' प। अब ओकरो में के कुछु उदाहरन लीहीं–

"ए घोर रजनी मेघ–घटा बन्धु!
केमने आईला बाटे, अंगिनार, कौने बन्धुआ
तितिछे, देखिया परान फाटे।।
विधुर निकटे बसि नेत्र पंचबाण, जघने कुचे
नवहु–नवहु रस गीत परिमाण,

परिचय संकेत अन्ते निज्जा।
चण्डीदास रस–कौतुक किज्जा।।

इसी प्रकार मैथिली के गौरव विद्यापति अपनी नायिका का वर्णन करते है–

"कुच जुग चारु चकेवा
निअकुल आनि मिलावल देवा।
ते शंका जे भुज पाशे,
बान्हि धड़ल उड़िजायत आकासे।।

एह तरह के घोर अश्लीलता के हजारों प्रमाण बा। हम दावा के साथ कहल चाहत बानी अइसन अश्लीलता भोजपुरी साहित्य में नइखे जइसन संस्कृत, प्राकृत, बंगाली आ मैथिली साहित्य में पावल जाला।

हँ, एने भोजपुरी के कुछु मनबिगरु बंबइया लखेरा लोग अपना निजी फायदा के लोभ में भोजपुरी के बदनाम कइ रहल बा लोग। एह लोग प लगाम लगावल जरूरी बा।

सवाल– भोजपुरी भाषा में कवियन के एगो लगहर फेहरिश्त बा। हाले के कवि महाकवि अइसन मान–सम्मान पावे खातिर बेचैन लउकत बाड़न। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के संवर्धन के लेके कवियन के अइसन मानसिकता के रउआ कवना रूप में देखतानी?

जबाब – कवि–काव्य के, साहित्य के महत्त्व एह बात में होला कि ऊ अपना राष्ट्र के, समाज के, लोक–परंपरा आ लोक–जीवन खातिर सचेत आ सजुग रहिके भविष्य के संभावना के आकार दे। जन–जीवन गहिर संवेदना से गुजरत ओकरा चाह–आह के उकेरे। काहें कि कविता मानवमूल्यन के एगो सोगहग आ सजोर चिंतन के धारा ह जवना में समाज आ राष्ट्र के जय–विजय, उत्थान–पतन, बदलाव–विकास के दस्तावेज रहेला। कवि आ कविता ओही रूप में सम्मान भा पुरस्कार पावेले। कवि के असल सम्मान आ पुरस्कार ई ह कि ओकरा कविता से समाज के बड़–बड़ बुधेसर के पेरना मिले आ जनमानसो के अन्हार में राह लउके। रंगदार कागज के टुकड़ा पवला से केहू महाकवि ना हो सके। कवि साहित्य के नैतिक रंगमंच प खड़ा रहल ओकरा के बड़ कवि बनावेला।

सवाल – का कवनो कवि आ साहित्यकार खातिर आ पुरस्कार ही ओकरा रचनाकर्म के आखिरी परिणति होला? एकरा के रउआ कवना रूप में देखल चाहब?

जबाब– कवि–रचनाकार अपना रचना–संसार में आखिरी समय तक सांस लेला। अपना शिल्प में, जन–मानस के संगे गुर–पानी बनल रहला में आपन पुरनाहुति समुझेला। ओकर प्रान–धारा जीवन के, जीवन–मूल्यन के शील्प गढ़ल आपन आखिरी पड़ाव मानेला। ई एगो सांचा कवि खातिर कवनो माने नइखे राखत कि ऊ कतना रंगीन कागज के टुकड़ा बटोरि – संगोरि के रखले बा। महत्व एह बात के होला कि ओकर चेतना लोक जीवन–राग से, धरती सोन्ह गमगमात गन्ध से, जिनगी के छटपटाहट के तेजी से जुड़ल बिया।

सवाल– भोजपुरी में शब्दकोश–निर्माण के लेके कुछ महत्वपूर्ण काम भइल बाड़े सन। एहू दिशा में अपने के काम गम्भीर आ रेरियावे जोग बा। एह सब का बादो का अपने एगो गम्भीर आ मानक शब्दकोश–निर्माण के जरूरत महूसस करतानी?

जबाब– एह विषय में दू बात जानल जरूरी बा। एक–शब्दकोश–निर्माण एगो निरंतर चलेवाली प्रक्रिया है। दोसर बात कि ई सामूहिक जगि हउवे। भोजपुरी शब्दकोश–निर्माण के दिसाई पहिलका प्रयास 'भोजपुरी शब्द–सम्पदा' के रूप में भइल। ई बहुते हलुक ऊदम रहल। दोसरका प्रयास आ ऊ हो एकल प्रयास सन्–1983 में साहित्य वाचस्पति, शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जी कइनी 'भोजपुरी शब्द सागर' के रूप में। एह में बहुत गंभीरता से उहां का काम कइनी। एह कोश में 20,000 (बीस हजार शब्दन के व्युत्पति सहित निर्माण भइल।

तिसरका उड़ाने खूब पोख्ता आ सचेत समूह के द्वारा काम भइल 'भोजपुरी–हिन्दी शब्दकोश' के रूप में। एह जगि में पं. गणेश चौवे जी अपना जिनिगी भर के फटकल–पंञचल शब्दन के कमाई के होम कइनी। एह कोश विशेषज्ञ समिति में बढ़ बड़ विद्वान शब्द–पारखी लोग रहे– डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, श्री रास बिहारी पाण्डेय, आ डॉ. अरुणेश निरन जी।

ओकरा बादो छोट–छोट रूप में प्रयास होत रहल– व्यक्तिगत रूप से। ध्यान देबे जोग ई बिन्दु बाड़े स कि शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी वाला

ओकरा बादो छोट–छोट रूप में प्रयास होत रहल – व्यक्तिगत रूप से। ध्यान देबे जोग ई बिन्दु बाड़े स कि शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी वाला शब्दकोश में बनारस से लगाइत बंगाल तक के शब्दन के जगह मिलल बा आ 'भोजपुरी –हिन्दी कोश' में पूर्वांचल में प्रचलित शब्दन के बहुलता बा। अब एगो अइसन शब्दकोश के जरूरत बा जवना में भोजपुरी भाषा भासी तेइसो जनपद में प्रचलित शब्दन के जांच–परख कइके बटोरल–संगोरल जाउ। एकरा बदे एगो बड़हन विशेषज्ञ समिति के जरूरत बा। ई समिति हर दू भा तीन साल प नया–नया शब्दन के सामिल करत रहे। आजु शब्दकोश निर्माण के रूप, शिल्प, सबकुछ बदल गइल बा। एकदम नया रूप में वैश्विक शब्दकोश के स्तर के भोजपुरी शब्दकोश निर्माण के जरूरत बा। लगभग पचास हजार शब्दन के संग्रह हम एही दृष्टिकोण से कइले बानी। कुछ उत्साही आ कर्मठ लोग चाहे त हम सब सऊंपि देबि।

सवाल– कवनो भाषा के साहित्य में अनुवाद के आपन अलग महत्व होला। भोजपुरी में अनुवाद साहित्य के रउआ कवना रूप में देखत बानी आ एकर भविष्य का बा?

जबाब– ई सवाल बहुत जरूरी वजनदार बा। आजु अनुवाद के क्रिया–कलाप के लक्ष्य भाषा के मानल जाता, आ लक्ष्य भाषा के सहज सरलता के सान प अनुवाद के कसल जाता–आंकल जाता। अनुवाद अतना जरूरी हो गइल बा कि भाषा–साहित्य का, सूचना संबन्धी साहित्य के सोझो एगो चुनौती बनि के खड़ा बा। भोजपुरी के सामने ई सांच मुखर होके खड़ा बा कि जेके भोजपुरी अपना शब्द आ वाक्य के जमीन प अपना भाषा आ साहित्य के स्वायतता के रखवारी ना क सकी त आहिस्ते–आहिस्ते बेजान बनि जाई। ई विषय अभी लम्बा चली। अनुवाद के द्वारा अपना भाषा–साहित्य प्रचार–पयसार दोसरो भाषा के खेत–खरिहान ले चहूंपि जाला आ अनुवादित भाषा पुष्ट बीज अपनो भाषा में आवेला। अनुवाद करे वाला के रुचि, संस्कार, मानसिकता आ ओकर धरातल, युग के परिवेश, सबकुछ अनुवाद के संगे दोसरा भाषा आ समाज तक पहुंचेला। एह खातिर बलवान आ धनिक भाषा, कुशल शब्दपारखी, संगे संगे मूलभाषा आ ल क्ष्यभाषा दूनो के पोढ़ जानाकारी अनुवादक के होखे के चाहीं।

एगो दोसर सवाल सोझा आवता कि केहू अनुवाद काहें कइल चाहता? अनुवाद जइसन झउराह काम खातिर सरहंग–शेसरू प्रतिभा चाहीं। मूल रचना कार के प्रतिभा से अनुवाक के प्रतिभा जादे गहिर–माहिर होखे के चाहीं। अनुवाद के जरिए अनुवादक मूल रचना के एगो नया दुनिया में, एगो नया समय में ले जाला अतने ना, अनुवादक अपना व्यक्तित्व के रंग चढ़ा के अनुवाद के समूचा सिवान के समेटत शैली के सिरिजना करेला। शब्दन के परख–पड़ताल करत मूल पाठ के संगे एकतानता बनाके ऊ आगे बढ़ेला। एकरा खातिर तीनिगो जरूरी कारक होलेस–

(1) अनुवाद करतखा मूल रचना के कल्पना आ सपना से अनुवादक के साक्षात्कार भइल, ओ. करा सघन–गझिन भाव के स्रोत के जस के तस पकड़ल।

(2) ई ध्यान राखल कि अनुवाद के तरीका आ शैली मूल रचना के समान बा कि ना।

(3) मूल रचना के सहजता, स्वाभाविकता अनुवाद में प्रतिबिंबित होत बा कि ना।

जहां तक भोजपुरी में अनुवाद के विषय बा ऊ ओतना संतोख देबे वाला नइखे लउकत। एगो दौर रहे, श्रीरामनाथ पाठक" प्रणयी", श्री हवलदार त्रिपाठी "सहृदय", श्री रमेश ओझा आ दर्जनों लोग एह अनुवाद विधा के परवान चढ़ावे के नेंव जांतल लोग। एहू घरी छिटपुट जवन अनुवाद भइल लउकत बा, बहुत भरोसा नइखे देत। एक दिशाईं समूह बद्ध प्रयास के जरूरत बा।

सवाल– कालिदास के रचनन के वैश्विक महत्व बा। कालिदास जइसन प्रतिभासम्पन्न कवि भोजपुरी में रउआ केकरा के मानल चाहब आ काहे?

जबाब– ई प्रवृत्ति बहुत ख़तरनाक बा। कवनों दोसरा समृद्ध साहित्य के कवनों महान कवि के संगे भोजपुरी के कवनो लोक कवि के साधे उचाई–निचाई नापल। समृद्ध संस्कृत साहित्य के अपने ही समय के अद्वितीय कवि कालिदास के संगे भोजपुरी के कवनो लोक कवि के बरबरी के चिंचिरी खींचल काव्यगत नासमझी बा। कालिदास के समय तक संस्कृत साहित्य में नाट्यविधा के उच्चतम मानदण्ड स्थापित हो चुकल रहे– आपन

मौलिक प्रतिमान स्थापित रहे। मानदण्ड गढ़े वाला, व्याख्याकार, विश्लेषकन के आचार्य मण्डली सक्रिय रहे। भोजपुरी में काव्य के, नाट्यलेखन के मौलिक कवन मानदण्ड बा? भाई, पहिले अपना साहित्य के सभ विधन के उंचाई दीं, आपन मौलिक लकीर बनाई, तब नू दोसरा के साहित्य आ ओकरा मानदण्ड के अपना मानदण्ड के आमने सामने राखि के उंचाई –निचाई आ बराबरी नाप जोख होई?

सवाल – अब त भोजपुरी के साहित्यिक संस्थन पर भी परिवारवाद आ जाति–धरम के आवरण के आरोप लागे लागल बा। एह सम्बन्ध में अपने के का कहल चाहब?

जबाब– ई भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास–विस्तार में बरियार बाधक प्रवृति बा। संस्कृत साहित्य के उत्कर्ष काल में एगो लकड़हारा सम्मान पूर्वक एक संस्कृत प्रकाण्ड ब्राह्मण विद्वान कवि के भाषा के व्याकरण सम्बन्धी गलती काटि देत रहे। अइसन समान से जादे योग्यता रहे ओकरा में। हिन्दी साहित्य के आदिकाल के नाथन में सभ जाति के सन्तन के समान भागीदारी रहल। भक्तिकाल के स्वर्णकालीन साहित्य के उन्नायक सूर, तुलसी, रहन त कबीर, नानक, भवानन्द, सुरसुरानन्द, सेना नाई, धन्नाजाट, रविदासो बराबरी के हिंसदार बनले। अतने ना, खुशरो, कुतुबन, मंझन, जायसी, रसखान कहवां कम कूतल गइल लोग? साहित्य में जाति–पांति कुछु ना होखे। हां, एह गलत भावना से अइसने अविवेक जनमी कि हमार फलाना शेक्सपियर, हमार फलाना कालिदास। एह मनोविकार के झाड़ू मारिए के भोजपुरी के चरम विकास के सगुन मन. ावल जा सकत बा।

सवाल– नई पीढ़ी के रचनाकारन खातिर अप. ने का संदेश दीहल चाहब?

जबाब– लिखे में जल्दीबाजी ना, अधीरता ना होखे के चाहीं। सौ में अस्सी प्रतिशत अध्ययन, सौ प्रतिशत चिन्तन पच्चीस प्रतिशत लेखन होई तबे कुछु काम के चीज भोजपुरी साहित्य में जुड़ी। भोजपुरी में तुलनात्मक अध्ययन के कमी बा। अवरू अवरू ढेर मैदान परती परल–मनोवैज्ञानिक आ वैज्ञानिक कहानी, उपन्यास, पुरातत्व सम्बन्धी शोध कार्य, दोसरा–दोसरा भषन के उत्कृष्ट साहित्य के भोजपुरी में अनुवाद आदि। काम बहुत बा। काम होत नइखे। समालोचना के आपन दृष्टि आजुले विकसित ना भइल। अंग्रेजी भा हिन्दी के चश्मा से भोजपुरी के समीक्षा से भोजपुरी के नाड़ी–ज्ञान ना होई। एकरा खातिर आपन समीक्षा सिद्धांत बनावल जरूरी बा।

■ ■

■ ग्राम–बगही, बढैया टोला
पो–रतनपुर, थाना–बैरिया
जि. प0 चम्पारण– 845438

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की सृजन-दृष्टि में झारखंड के संस्कृति

कनक किशोर

रचनाकार के परिवेश प्रभावित करेला। ओकर मानसिकता परिवेश के एक–एक दिन के आँच में तपिके–सींझिके जीवन के सांच के अनुभूति में उतरेला। ओही अनुभूति के सजग कवि अपना रचना के पंक्ति–पंक्ति के अर्थ–तंतुअन में भरेला। अपना अनुभूति के रागात्मक दृष्टि से अपना परिवेश–क्षेत्रिय परिवेश के संस्कृति,कला के बड़ी बारीकी से देख–परे ख करेला। ओकरा में दउगत तरल गतिशीलता, लय तथा हृदय के छुएवाला कँपकँपी के अभिव्यक्त करेला। आचार्य हरेराम त्रिपाठीश्चेतनश के रचना संसार में अइसने झारखंडी संस्कृति के आशय, आकांक्षा के आ कलागत कोमल चेतना के उभारल गइल बा। आदिवासी–जीवन के भाव–संवेदना, समय के संगे संगे चलेवाला जीवन के भाव–राग आ मांदर के थाप में प्रेम–क्रांति के चित्र खूब मनोजोग से खींचल गइल बा। झारखंड के जनजातीय गीतन में जहाँ एक ओर मानवीय ताप के शब्द दिहल गइल बा उहंवे नृत्य के पद–गति में आ गीतन के आरोह–अवरोह में मनुष्यता के करेज में सालत हजारन वर्ष के संघर्ष गर्मी के नापो–तउल कइल गइल बा। आदिवासी जीवन की भौंहनि के चूमत इतिहास के रेखा, हृदय के दहकत पलाश आ जिनगी के कमर पऽ अनुभव के छलकत गगरी तथा हृदय–हृदय में उतरि जायेवाला उछलत गीत के बोल के चेतन जी के साहित्य में पिघलल–पसरल बा। श्रम–अनुभव के देशज निखार, दैनिक सच्चाई के संतुलित आ बारीक बुनावट चेतन जी के काव्य में अनुगुँजित भइल बा।

हमनी हईं आदिवासी नर–नार कि झुकि–झुकि जोहारत चलीं
बाँटी सबके पिरितिया, दुलार कि झुकि–झुकि जोहारत चलीं।
काँटन के संग हम खिलिंले गूलाब अस।
सबका नजरिया में मोतिया के आब अस।
बहे अंग–अंग स्वर्णरेखा–धार कि झुकि–झुकि जोहारत चलीं।
झेल–झेल धूप,छाँह दींले अगराइके।
झोपड़ी में खुश,लाख महल बनाइके।

कतने लाँघि जानी दुख के पहाड़ कि झुकि–झुकि जोहारत चलीं।

आदिवासी लोक जीवन राग–रंजित गीत जइसन होला।हर आदिवासी के दैनिक जीवन गय में लिखल कहानी बनि के गुजरला।साँच पूछल जाव तऽ झारखंड के लोकमानस आकृति आ भाव के साधना एक साथ करेला।एही बात के तनिक अवरू सुधारि–सँवारि के कहे के परे तऽ कहल उचित होई कि आदिवासी चित के अन्दरूनी रचना में गाढ़ श्याम रंग के अइसन पारदर्शी भाव के अनुलेप चढ़ल बा कि तनिक गौर कइला पऽ पुरूषोत्तम के बिंब कौंध जाला–बिंब के कौंध दर्शक के ओह रस–दशा में चहुँपा देला जहाँ पुंजीभूत सौन्दर्य वन में घुमत,गाय चरावत, अपना बाँसुरी वादन से, अपना संगी–साथी,आ कोमल नारी शब्दन में अलौकिक भाव–संवेदना लबालब भरि देला।ओ स्थिति में हर युवक कृष्ण आ हर आदिवासी युवती ब्रजकुमारियन अइसन लउके लागेली।एह उदात भाव के चेतन जी अपना भोजपुरी गीत के काया में समेटले बानीं।

हरि–हरि वृन्दावन बनल वृनदावनवाँ ए हरि।
जोन्हा, हिरनी झरना सुन्दर,
स्वर्णरेखा–तीर रामाऽऽ।
हरि–हरि बाँसे–बाँसे गूंजे बंशीधुनवाँ ए हरि।
छल–छल, कल–कल कोयल कारो
दसम,तजना,हुन्डरू रामाऽऽ।
हरि–हरि,साल,साख लागेला कदमवाँ ए हरि।

ई झारखंड के प्रकृति–परक सामुहिक चित्त के सौंदर्य हऽ–जवना में चेतन जी तीव्र मधुर ब्रजभाव के संवेदना सरस ढंग से सादृश्य बिम्बन के जरिए व्यक्त कइले बानीं।बड़ी कुशलता से एह गीत में झारखंड के समूचापन के भाव आ ओह भाव के आँगन के प्रतीति–बोध चेतन जी करवले बानीं। झारखंडी प्रकृति के संगे वन जीवन,

संस्कृति आ प्रकृति के जीवन के अभिन्न अंग के रूप में चित्रण एह गीत में भइल बा।वनवासिन के आर्थिक आधार,गाय,बकरी,पक्षिन के, पर्वत के,मांदर आ झूमर के आदिवासी जीवन से अलगा के ना देखल जा सके। झारखंड के बूढ़ आ जवान नारी समाज के आँखिन में प्रान के हुल्लास, हृदय के पियास के फैलाव आकासो के अपना गरमी से पिघला देला आ जानबूझ झूमर के आसव पीके झारखंड के अँगनाई में घनश्याम के संगे रास करे खातिर आकासो सदेह उतरि आवेला।

बनवाँ के कोने–कोने नाचेला कन्हैया रामाऽऽ।
हरि–हरि गुँइया टेरे मीठ–मीठ तानवाँ ए हरि।।

झारखंड के नर–नारिन के सामूहिक हृदय के झूमर आ पयार गीतन के मधुर गूंज, मांदर के थाप आ जुवतिन के नृत्य में लीन पद के ताल गति के सम्मिलित मन्द–सान्द्र ध्वनि से साल आ पलास के चुप्पी टूटि जाला। पुटुस के उलझल शिरा सुबके लागेला। मुरूगन के नीन्द उचटि जाला।इंसानि के ताल–तलैया आ झरना में पवँरे के ललक बढ़ि जाला।

हरि–हरि बदरा नाचे मांदर बजनवाँ ए हरि।।
हरि–हरि झूमर कढ़ावेला किसनवाँ ए हरि।।

झारखंड के निश्छल आ सहज संस्कृति में सोके आ खोके भी पावे के संकल्प होला। अतने ना हँसिके–रोइके बोइ के काटे के उमँग होला। एह समाज के सांस्कृतिक जीवन में दुख आ अभाव अलसाइल रहेला। अघा के अतिशि बनल रहेला बाकिर सुख के बतास आके पल भर में चलिजाला। ई सब कुछ घटत रहेला–होत रहेला। आदिवासिन के इज्जत, पूरा समाज के उधारपन पेड़न से–पेड़ के पतइन से, पहाड़ के चोटिन से,झील आ झरना से उठत सुबह सकेरे के भाप से आ हँड़िया के ताप से ढ़ँकल रहेला। प्रेम में बंद गोताइल गीतन के धड़कन में,आँगन आ बसार के मनुहार में,आ भाषा–चेतना के सुरीला राग में द्रष्टा कवि चेतन जी के वृन्दावन आ राधा–कृष्ण के मधुर मुरति लउकत रहेला।

बाचा अस हँसे नभ,बून्द–दाँत झलके रामाऽऽ।
गीत, गीत–भाषा में आ आँगन बरखवा में।

लम्बा काल से चेतन जी के झारखंड के संस्कृति से जुड़ाव, अनुभव–अनुभूति के निचोड़ बा कि झार खंडी संस्कृति के धड़कन,साँस–साँस से, ओकरा वन के पतई–पतई से, वन–पर्वत के रेशा–रेशा से, नस–नस से चौबीसो घड़ी अखाड़ा, मांदर, नृत्य, टुहिला, बाँसुरी, केन्दरा आ सारंगी के आकांक्षा आ अतृप्त चाह लहरा रहल बा उहाँ के रचनन में।

हिय–धड़कन पल–पल कहे, अखड़ा,मांदर, नृत्य।
टुहिला, बँसुरी, केन्दरा, सारंगी भल रीत।।

चेतन जी के भोजपुरी चेतना झारखंड के सांस्कृतिक आत्मा से एकाकार होके इहाँ के हवा के रन्ध्रजाल से निकसत सारांश के बहुत गहराई से महसूस कइले बानीं। झारखंड के नारिन के राह चलल नृत्य हऽ, लय ताल में मुँह से निकसल बोल संगीत हऽ आ वृक्ष मांदल हउवे, आ नितम्ब से धुन,राग–रागिनी पैदा होले। एह संस्कृति के उदात्त आ सोगहग रूप सम्मोहक आ देखे लायक बा चेतन जी के काव्य सृजना में।

चलल नृत्य,लय–तालऊ,हर–मुँह बोल संगीत।
मांदर–वृक्ष, नितम्ब धुन, राग–रागिनी गीत।।
सनल तरावट सरस सुर,मधु अस भीड़–प्रवाह।
लूझरी, झूमर,लहसुआ, जदुर, निरधदुर–चाह।।

जीवन के वर्जना के धकियावत झारखंड के संस्कृति कायान्तरन के ललक जगावेले। बहुत दुलार से जिनगी के आँचर–छोर पकड़ि के नयापन के तेवर से मन के शल्य क्रिया करे में कुशलता के पाठ पढ़ावेले। झारखंड के संस्कृति सिन्धु घाटी से आजु तक के संघर्ष यात्रा के कहानी आ जीवन के सामुदायिक बुनावट अनुभव के देशज निखार हऽ। आचार्य चेतन जी के अनुभूति सही रूप में अपना काव्य संवेदना के निगाह से छनले आ छुवले बानीं। झारखंडी मन–मस्तिष्क में कसकत मंडरात सपना के भंगिमा में देखले बानीं।

देख पुलकित हैं विहग पलाशी बयार से,
नृत्य रत मयूर मत हैं पठार–प्यार से।
चूनर भिंगी है प्रकृति की पावस–फुहार से,
झूम जायें धान–बालियाँ झूमर–दुलार से।।

■ ■

■ राँची (झारखंड)
चलभाष –9102246536

भोजपुरी-हिन्दी अनुरागी : श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी

राजेश भोजपुरिया

"लाऊ हिलोरा अम्ब तें
आजु नीम के डार।
भोजपुरी में गाउ झूलि
माई! सुर जिअतार।।
लागल काव्य पिआस त
आजो भाषा पीठ।
चेतन भोजपुरिया किहाँ
ओज कविता–रस मीठ।।"

अइसन व्यक्तित्व पर लिखे के मौका मिलल अपने आप में गौरवान्वित करे वाला बा। इहाँ हम कलम चलावे जा रहल बानी भोजपुरी–हिन्दी साहित्यानुरागी जे दोल्हा संग्रह आ भोजपुरी के संस्कार गीतन के सम्पादन क के बड़हन काम कइले बानी, स्वभाव से गम्भीर आ मिलनसार व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार आदरणीय श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी पर। आदरणीय 'चेतन' जी के जनम 19 मार्च, 1942 के ग्राम–चारघाट, थाना–बिहिया, जिला शाहाबाद, आरा (भोजपुर) में भइल रहे।

इहां के पढ़ाई–लिखाई में एम.ए. (हिन्दी), आचार्य त्रय (संस्कृत साहित्य, व्याकरण एवं सांख्य दर्शन) के उपाधि प्राप्त कइले बानी।

आदरणीय श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी शुरुवे से साहित्य के भण्डार भरे में आपन भूमिका बखूबी निभ. ावले बानी। इहां के कुछ प्रमुख मौलिक हिन्दी के कृ ति बाड़ी सन :–

विरहिणी मीरा–क्रांतिकारी प्रेमसाधिका (हिन्दी समीक्षा ग्रंथ), मदालसा (खण्ड काव्य), प्रेम लपेटे अटपटे (खण्ड काव्य), प्रेममयी शबरी (खंड काव्य), पंचामृत (भक्ति गीत संग्रह), ना मैं देखूँ और को, बिम्ब आ प्रतीक (हिन्दी समीक्षा ग्रंथ), महादेवी वर्मा आ उनके गीत (हिन्दी समीक्षा ग्रन्थ), कबीर समय के साक्षी, अंतर के आंगन से (गीत काव्य), युग्म भूमि (काव्य), उलगुलान की आग (प्रबन्ध काव्य), इत्यादि।

इहाँ के साथे एगो बड़हन उपलब्धि जुड़ल बा, डॉ जे.जयराम द्वारा 'चेतन' जी के सात गो कहानी के अनुवाद तमिल भाषा में कइल गइल बा। साहित्य जगत खातिर बड़हन उपलब्धि कहाई।

श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी अपना साहित्य लिखे के शुरूआती समय से ही भोजपुरी–हिन्दी साहित्य के सेवा करत कहानी, कविता, गीत, दोहा, आलेख इत्यादि के रचना करत आइल बानी। अबही इहां के न्यू एरिया, मोरहावादी, राँची (झारखण्ड) के निवासी बानी। आदरणीय 'चेतन' जी बाबूजी के बढ़िया साहित्यिक मित्रन में से बानी। साथे–साथ इहां के स्नेह आ आशीर्वाद हमरो बराबर प्राप्त भइल बा। कई गो कार्यक्रम के दौरान इहां से भेंट भइल आ आशीर्वाद मिलल बा।

आदरणीय श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के कलम लगातार भोजपुरी साहित्य पर चलत रहल बा। जवन इहां द्वारा लिखल भा सम्पादन कइल कृ तियन से पता लागेला। हम आदरणीय 'चेतन' जी के भोजपुरी के कृतियन में प्रकाशित आ सम्पादित भइल पुस्तक के चर्चा कर रहल बानी :–

'उबियान' (भोजपुरी काव्य–संग्रह), 'गीत प गीत' (भोजपुरी गीत–संग्रह), 'भीतर आंत धुंआंत बा' (भोजपुरी दोहा–संग्रह), 'माटी गावे गीत' (भोजपुरी गीत–संग्रह), 'सावन के झींसी' (कजरी गीत–संग्रह), 'फूल गंगवरार के' (भोजपुरी गीत–संग्रह), 'हूलिदे पेशावर ले' (भोजपुरी वीररस–काव्य), 'बिरहा विनोद' (भोजपुरी दोल्हा–संग्रह), 'लोकगन्धी' (भोजपुरी के संस्कारगीत)। एकरा अलावे कई गो प्रकाशन कतार में बाड़ी सन।

श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' हाल के दू तीन बरिस में भोजपुरी के गीतन पर काम कइले बानी। जवना में पारम्परिक दोहा, बिरहा गीत भा संस्कार गीत शामिल बाड़ी सन।

"अस बाजार के कहर बा, घायल हँसी, हुलास।
सृष्टि मंच के नाच ह, अस्त–पस्त सभ पास।।"

x x x x

"मुहवाँ से बिरहा के सुर लहरात रहे,
कान में अंगुरिया के डाल।
बाँसवा के छड़िया, सोभत होखे हथवाँ में,
'साथे–साथे बोलिया कमाल।।"

आदरणीय चेतन जी के कहनाम बा कि बिरहा विलुप्ति के कगार पर बिया जेकरा के बचा के राखे के बा। बिरहा गावे वालन के भी कमी हो गइल बा। इहे सोच के नतीजा रहे कि 'विरहा विनोद' (दोल्हा संग्रह) के प्रकाशित कइल गइल।

"ना बिरहा के खेती भइया,
ना बिरहा फरे डार।
बिरहा त उपजेला ह्रदय में ए राम
जब उमगे तब पार।"

आदरणीय श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के कई गो सम्मान–पुरस्कार से सम्मानित भी कइल गइल बा, जवना में प्रमुख बा :– अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गाजियाबाद द्वारा हिन्दी भाषा साहित्य में योगदान आ सम्पादन खातिर सम्मान, भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर द्वारा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर भोजपुरी में अवदान खातिर सम्मान, कार्मिक प्रशासनिक आ राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार का ओर से हिन्दी साहित्य में योगदान खातिर सम्मान, गुजरात, महात्मा गाँधी विद्यापीठ द्वारा सम्मान पुरस्कार इत्यादि। एकरा अलावे आउर भी कई गो संस्था द्वारा सम्मान से सम्मानित कइल गइल बा।

"गाँव के बढ़ाव, बेटा–बेटी के पढाव
परिवार में उगाव सद्ज्ञान।
फरी–फूली सभ केहू उपजी गुलाब–गेहूँ,
खिली मुँह पर मुसुकान।।"

हमरा याद बा इहां से साल 2019 में 17 अप्रैल, 2019 के आरा के वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के भोजपुरी विभाग में आयोजित भोजपुरी के विद्वान स्व. चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के श्रद्धांजलि सभा के दौरान भेंट भइल रहे, जवना में हमरा शामिल होखे के सौभाग्य प्राप्त भइल रहे आ इहां के आशीर्वाद प्राप्त भइल रहे। एह आयोजन में आदरणीय चेतन जी विशिष्ट अतिथि के रूप में राँची, झारखण्ड से उपस्थित भइल रही।

आदरणीय श्री हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' चाचा जी स्वस्थ रही, दीर्घायु होखी आ भोजपुरी–हिन्दी साहित्य के भण्डार असही भरत रही, इहे कामना बा।

जमशेदपुर, झारखंड
सम्पर्क– 9031380713

अभिनन्दन

रामप्रसाद साह

दोहा में दुनिया लिखल, गागर सागर मान।
हरेराम 'चेतन' लिखस, आगम आगर ग्यान।।

चौरासी के वय भइल, भोजपुरी के अंश।
घुमत फिरत रचना करस, राम छबीला वंश।।

साधक सुरसति के हँई, सुयश बढ़ल बा नीक।
चारघाट में अवतरित, भोजपुरी ला ठीक।।

चरण कमल में दण्डवत, भेजी हम परनाम।
महापुरुष श्रध्देय के, जपे सभे नू नाम।।

भर–भर अँचरा फूल से, गमक पुगल नेपाल।
बगिया माई के खिलल, पार पुगल बा डाल।।

सबद भाव के योग से, दोहा दर्शन तेज।
विचलित पथ से जन बचे,दोहा के बा ओज।।

सूक्ति वेद जस बा बनल, पग धरि चलहूँ राह।
मनवा माने जे वचन, काहे निकसी आह।।

कहन बनल उपमा सजल, दोहा के रसखान।
अन्तर मन के जोत से, साहित के पहचान।।

यमक चमक बा श्लोक में, अलंकार के बीन।
पाठक के मन मुग्ध बा, पढ़त सुनत हो लीन।।
मौलिक शालिन बोल से, सहज सरल बा भाष।
कहीं कहीं बा गुढ बनल, गुनत श्रम आभाष।।

कल, बल, लय से जिन्दगी, अदरा बूने सीप।
दोहा मोती तब बने, जइसे चमके दीप।।

माटी गावे गीत में, फगुआ चैता गान।
पोथी दर्जन लिखल बा, भोजपुरी के जान।।

चेतन चम्पा वन खिले, पियर सुमन के रूप।
पूजनकर्ता माधवी, अक्षत चन्दन धूप।।

अभिनन्दन नेपाल से, सरधा के दू फूल।
दीर्घ उमिर शतायु हो, लोग व्याधि ना शूल।।

■ कलैया, नेपाल
संपर्क– 9779845035445

इन्द्रधनुषी चरित : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

कनक किशोर

इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व चेतन के
लोकरंग के ऊ हवन चितेरा,
सहज, सरल भोजपुरिया मनई
साहित्य ह प्राण से बढ़के प्यारा।

अध्यात्म जीवन कण–कण में
त्रि–संध्या जप तप आउर माला
संयमित जीवन जियले हरदम
साधना ह उनकर दूशाला।

जीवन जीयस वैरागी जइसन
नियम के बाड़न बड़का पक्का
साहित्य साधना चले अनवरत
बाँटस प्रेम, ज्ञान बन कक्का।

गृहस्थी के सफल चालक बन
अनासक्ति से जीयस जिनगी
करम आ सत्संग के महिमा
जी के बतलावस समाज के।

संत सा ईश्वर अनुरागी
ईश्वर प्रीत साहित्य बखाने
अन्न धारण योगी के जइसन
मानव ऊ कर्मयोगी जइसन।

माई सरस्वती जिह्वा विराजस
हिन्दी, संस्कृत, भोजपुरी में
एक समान ऊ कलम चलाके
साहित्य के भंडार बढ़ावस।

गुण के खान बारहगुणा झूठा
हँसत खेलत सब बात बतावस
शव के छोड़ शिव से जुड़ल
नमन ओह इंद्रधनुषी चरित के।

■ राँची

आचार्य चेतन आ 'फूल गंगबरार के'

मार्कण्डेय शारदेय

'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' माने ई जे मानव के महाशत्रु अउर केहू ना, ओकर आलसे ह। ई आलस हमरा पोरे–पोर में समाइल बा। एकर प्रमाण पूछल जाउ, हमार करेके तरीके बता दीही। जबले केहू पोंछियावत ना रही, तबले काम धराऊँ बनल रहेला।

भोजपुरी भाषा के श्रीवृद्धि करेवाला वयोवृद्ध सारस्वत साधक आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी के स्नेहपात्र हम फेसबुकिये संसर्ग से भइलीं। फोने के वाचिक संस्पर्श से सुधासिक्त होखत रहींला। इहाँ के मधुस्रावी वाग्मिता से इहाँ के सहग–अनुगवर्ग सहजे निहाल हो खेलें, अइसन हमरा अनुमान बा। जवन सम्प्रेषणीयता इहाँ में बिया ऊ अचके अपनिया लेले। 'कः परः प्रियवादिनाम्'?

इहाँका बड़ा अगराके आपनि किताबि 'फूल गंगबरार के' भेजलीं। असरा होई जे हमार छोट कलम कुछुओ ना कुछ ते लिखबे करी। आस के आँख खुलल रहि गइल। दिन महिनन में बदलल, बाकिर हमार आलस इहाँ के तृष्णा के तृप्ति नाहिंये देलसि।

खैर, समादरणीय कनककिशोर जी के विशेष धन्यवाद देतानी जे इहाँके 'चेतन' जी प अभिनन्दन–ग्रन्थ निकाले के सम्हरलीं। एह यज्ञ के प्रधान आचार्य भोजपुरी साहित्य के बड़नामी साहित्यकार डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी बानी आ अउरो मित्र लोग ऋत्विज के भूमिका में बाड़ें ते सोचलींहा जे चलीं एक पन्थ दू काज हो जाउ। उक्त किताब के आधार पर चेतन जी के सारस्वत अवदान पे चर्चा के एह यज्ञ में सहभागिता निभाके पुण्यभागी बनल जाउ।

'फूल गंगबरार के' भोजपुरी के एगो गीतिक. ाव्य है। भगवती के महिमा से सम्बद्ध 101 गीतियन के संग्रह में भक्तिरस के प्रवाह देखते बनत बा। एकर हर गीत के गीतियोजना स्पृहणीय बिया। शुरुआते पावलगी बा। जइसे केहू बड़–जेठ के इहाँ पहुँचते अगराके पैर छुए लागेला, नेह–छोह के ख खाइल यात्रा के थकान भुलाके अपना प्रियतम, आदरणीय, कृपावर्षक के पासे जाके, जइसे भक्त सालोक्य, सामीप्य आ सायुज्य पाके सब कुछ बिसार देला, ओसही कवि के स्थिति बिया। जइसे प्रियमिलन के सुअवसर पाके प्रेमी अपना सौभाग्य के सराहे लागेला आ ओह घरी जे–जे लउकेला, सुयोग में जेकर–जेकर सहयोग बुझाला, ओकर–ओकर आभार माने लागेला, ओसही चेतन के चेतना अपना भूमि से लेके अपना सम्बन्धियन के साथे आध्यात्मिक पथ के हर सजीव–निर्जीव अवयवन के कृपा मानत भावविह्वल होके मुखरित बिया। एही मुखरता में बाह्य साध ना से आन्तरिक साथना आ ओहू में सर्वशक्ति– स्वरूपा के सरस्वती–रूप 'ऐं', लक्ष्मीरूप 'ह्रीं' आ कालीरूप 'क्लीं' के त्रिगुणात्मकता के गुणगान होखे लागता–

'ऐं–ऐं कहि–कहि के पगलागीं।
ह्रीं–ह्रीं कहि–कहि के पगलागीं।
क्लीं–क्लीं कहि–कहि के पगलागीं।
अनकहलो कहि–कहि पगलागीं'।

एह 'अनकहलो' में समस्त ध्वनियन के समाविष्टि बिया, जेकरा आक्षरिक संयोग में सर्वशक्ति आ वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती से लेके परा तक के समष्टिभूत अक्षमाला बनेले, भा 'महाभाष्य' कार पतंजलि जवना के बारे में कहताड़े–

'उत त्वः न ददर्श वाचम् उत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनम्।
उत त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः'।।

खैर, कवि एह पहिलि गीति में अतना गूढ़ से गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यन के खोलले बा कि सामान्य जन खातिर भारी बा आ जानकारन खातिर विस्तारभय। ई वास्तव में प्रथम प्रभाव के साथे मंगलाचरण ह।

ऋद्धि–सिद्धि आ शुभ–लाभ अधिकारी मंगलकारी, विघ्नहारी गणेश जी के साथे आगे बढ़त दुसरका भजनो मंगलाचरणे ह भा अनुष्ठान में अग्रपूज्य के अग्रपूजा। फिर त भक्त जगजननी के पासे पहुँच जाता, बाकिर जगजननी ना मानिके अपने माई मानत अँचरा पकड़िके 'बालानां रोदनं बलम्' के बले दयावारिधि से अपने माँग मनवावे खातिर आपनि गलतियो बखाने लागता। काहें कि ऊ जानता जे हमरा गलतियन के ढेर के कारणे माई तनकी खिसियाइल बिया, दुरदुरवले बिया। ऊ साफे कहता–

'ए जननी! जगरानी! असरन– सरन बा मद हर।
हठी अनटी बानी, टकसबि ना, मानी दुख–दर'।।

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य आ आत्मनिवेदनय एह नौ तरह के भक्तियन में कीर्तन, स्मरण, वन्दन, दास्य आ आत्मनिवेदन एह पाँचो के उपस्थिति से भजन भरल बाड़ें।

भक्ति के धार नदी के धार लेखा होले भक्त के बहावत आपन नाना रूपन के देखावत तन–मन के बहावत ले–ले चलेले। एही से कवि चेतन के भजनो में अनेकन भाव के दर्शन होता। तरह–तरह के रचना–विधान आ तरह–तरह के मनोभाव के हृदयावर्जक प्रस्तुति बिया। तबो एकर अंगी प्रपत्ति बिया। कवि स्वयं के ओड़हुल के फूल मानिके समर्पित करत कहता– 'मइया, परल बा ई फूल गंगबरार के'।

एह कवि के समर्पण में आचार–विचार के ना, सहज स्वभाव लउकत बा। एहू से बढ़िके खाँटी भोजपुरिया जिदियाह बेटा के प्रकृति के दर्शन होता। जइसे ऊ पयरे छान लेला, ओसही कवियो करता। निदर्शनार्थ कुछ अंश देखल जाउ–

'चोन्हा करी, नधिआइ, रोई छेरिआई।
लोरे–लोरे अँचरा भिंजाई रे माई।
तोर ई दुलरुआ काहाँ जाई रे माई!' (भ. 22)
'लइके खातिर बरद कर होला,
तें ओकरे कहाँ लुकइबे माँ!
ले, धरना देनी दउगि दर तोरे,
पगवा कहाँ छिपइबे माँ!' (भ. 60)

कवि जानता जे माई के अलावा अउर केहू नइखे जे पूत के पीर प पसीजी।एही से कवि कहता–

'हमरा पीरा के माइये दुलार करिहें।
अपना माया में हमरे ना भरमइहें'। (भ.42)

ऊ साफे जानता कि समर्थवान माई बिया त दुआरी–दुआरी मँगला के कवनो काम नइखे। ओकर एकनिष्ठतो के उद्घोष बा–

'काहें अनका से माँगी हाथ नीचे के के हम?
माथ पगवे पे ध के अभिमान करींला'। (भ.65)

अइसन बात नइखे कि कवि वैराग्य में बा। हँ, ऊ अनुराग–विराग के बीचे बा। एहीसे अनुराग अपनावता त विरागो। विषयाशक्ति जब खींचातानी करतिया त कहता–

'कबहूँ अनुरागी बनि जाला,
कबहूँ बयरागी बनि जाला'।(भ.5)
'मन काहेदोनी मोह के अन्हारी चाहता।
कइसे बासना अलोतीं,
बहे नदी परसोती।
लोभ कामना के कनेआ कुंवारी चाहता'। (भ.6)

कवि के आध्यात्मिक पहुँच बड़ा ऊपर बा आ शब्दप्रयोग एवं बिम्बविधानो एक से एक बा।

हम जवने भजन के लेके देखेतानी, रत्नहृदय लउकता। यदि एक–एक भजन के आध्यात्मिक, काव्यशास्त्रीय आ शब्दशास्त्रीय तत्त्वन के लेके विश्लेषण कइल जाउ त नीमन कइयकगो शोधग्रन्थ तइयार हो जइहें। कबो अवश्य केहू होई जे एह कृति के मूल्यांकन कके अपने के मूल्यवान बनाई।

■ ■

■ पटना, बिहार

'हूलिदे पेशावर ले' के बहाने

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरिया माटी–पानी से देश प्रेम के लगाव कवनो काल में कम ना रहे आ अजुवो कम नइखे। देश के माटी अपने एह सूर–बीरन के आ उनुके बलिदान के कबों अनदेखी ना क सकेले। देश के खाति नेवछावर होखे के जजबा भोजपुरिया लोगन के खून का संगे बहत रहेला। जवना के अलग कइल संभव नइखे। भोजपुरिया लोगन के एह गुन से सभे वाकिफ बा। उनुके एही गुन का चलते हिन्दी आ भोजपुरी के वरिष्ठ कवि आदरणीय हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी अपने कवित्त संकलन 'हूलिदे पेशावर ले' में गहिराह बले इयाद कइले बानी। उनुका ई संग्रह भोजपुरियत आ देश प्रेम के भाव–भूमि से सराबोर बा। ई संग्रह बीर रसात्मक कवित्तन के संग्रह ह। ई कृति अपने में कुल्हि 73 गो कवित्तन के समेटले बिया। एह कृति के पढला के बाद अजुवो ई भान होता कि भोजपुरिया जवानन के कीर्त्ति पताका अबो जस के तस लहरा रहल बा। एही से कविवर भोजपुरिया जव. ानन के आह्वान करत देखात बाड़ें। आचार्य 'चेतन' जी उद्भट विद्वान मनई बानी, फेर उहाँ के रचना धर्मिता पर टिप्पड़ी कइल सुरूज के दियरी दे खावे लेखा होखी। बाकिर विद्वत समाज के आदेश के अवहेलनो कइल हमरा बस के बात नइखे।

लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान लोग जब रचना करेला ऊ उनुका लग्गे विषय धउरत भागत चहुंप जाले। भोजपुरी के कई विद्वान लोग चेतन जी में भोजपुरी के केशव क अक्स महसूस करेला। अइसना में उनुके भाषा–शैली के मजगुती के सहज भान हो जाला। भाषा के सहजता आ सरसता के भान त एकरो से हो रहल बा कि एक पढ़ल शुरू कइला का बाद ओरवाइए के मन मानेला। कई–कई बेर पढ़े के मन होखेला। कवित्त संकलन 'हूलिदे पेशावर ले' में बीर रस के कवित्त बाड़ें सन जवना के पढ़ला के बाद केकरो मन में देश खाति अनघा नेह आ दुसमन खाति दुराव भा गुस्सा होखल सोभाविक बाति बा। ई स्थिति पाठक के सोझा पहिल कवित्त पढ़ते मन में जाग रहल बा। संग्रह में पौराणिक आ ऐतिहासिक आधार से उदाहरण लीहल गइल बा। देवी–देवतन के मान्यता के अनुरूप स्मरण कइल गइल बा। एह संग्रह के पढ़त बेर सभेले पहिले जवन–जवन बाति जेहन में

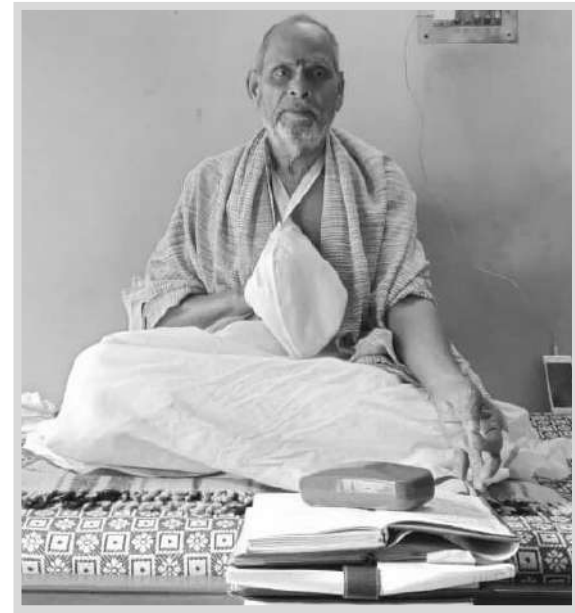

आवेले उ पाकिस्तान आ ओकर प्रायोजित आतं. कवाद के समस्या आ कई बेर के युद्ध आ ओहसे भइल नोकसान के बाति स्मृति में पंवरे लागेला। कवित्त संकलन के शुरू के कई गो कवित्तन में भोजपुरिया माटी के जामल शूर–बीरन के आह्वान कइल गइल बा। बजरंग बली लेखा भोजपुरियन के भुजा के जोर, उनुका लड़ाका सोभाव के मन परावल गइल बा, ओहिंजे कवि अपना लेखनी के आह्वान करत देखात बाड़ें–

खिंची के चिचिरिया, दे किरिया धराई धाईं
देश के जवानी खून खउला दे लेखनी।

भोजपुरिया बीरन के यश गान करे में कवि श्रेष्ठ के लेखनी के उदारता देखे जोग बा। कवि पाकिस्तान के हुक्मरानन आ उहाँ पलत–बढ़त आतंकी गिरोहन के बेर–बेर चेता रहल बाड़ें। मुशर्रफ के चेतावत भोजपुरिया माटी के ओह कुल्हि क्षेत्रन के उनुके विशेषता का संगे इयाद कइल गइल बा–

कस बा सकस,कस–कस दूनो मुठ्ठिन्ह के,
धसक, ठसक, भोजपुरिया के हूरा बा।

भोजपुरियन के पहिचान लाठी के मानल जाला आ जवना के निचलका हिस्सा के हूरा कहल जाला, ओहिके ताप ई रचना बता रहल बा। पाकिस्तान के चेतावत कवि कह रहल बाड़ें कि अगर अबकी बेर युद्ध भइल त ओकरा संगे का का हो सकत बा। अबकि ओकर ईंट से ईंट बजा देवे के बाति कहत कवि लिख रहल बाड़ें–

बाजी ईंट ईंट से, पखान से पखान बाजी
धूरे धूर मची, होखी महल खोभाड़ी अस।

पाकिस्तान के सोझे–सोझे अस्तित्व मेटावे के बाति बा। पाकिस्तान एह घरी छद्म युद्ध करि रहल बा, ई सभे के पता बा। अइसना में पाकिस्तान आउर ओकरे रोपल आतंकवाद का चलते कवि के नजर में ओकर छवि लबार के बा।

बिना हुरपेटले ई मानी ना लबार यार!
दांते नोहे हबकि ले, देहिया चिखुरि दे।

कवि खाली कश्मीरे वापस लेवे के बाति नइखे करत। उ त सगरी पाकिस्तान पाकिस्तान के ऊपर आधिपत्य के बाति करि रहल बाड़ें। कवि पाकिस्तान के चेतावत बेर–बेर कहि रहल बानी कि भारत के जवान लो जब बड़–बड़ लड़ाकन के धूरि चटा चुकल बाड़ें, त तहरे में का बा–

तुगलक आ लोदी–दल दरि देनी कोदो अस
तोके का गदानी? तें तै जनमें के टेंटीहा।

कारगिल घुसपैठ से त पूरा देश के लोग दु खी रहल। अइसना मे कवि मन के व्यथित होखल सोभाविक बा। पाकिस्तान के आतंकी संगठन के करतूत बतावत कहि रहल बाड़ें–

लीग, तालिबान, बिनलादेन आखान,
चोर अफगान छीपि–छीपि आइल सरेह में।

कवि 'चेतन' अपने कवित्तन में पाकिस्तान के शिमला समझौता आ लाहौर घोषणा पत्र के इयाद करा रहल बाड़ें। बाकि पाकिस्तान अपने धोखाधड़ी से बाज आवे वाला नइखे। एकरा चलते उनुकर लेखनी आग उगिलत देखात बा–

किरन आ उरी से, उ भागल रजौरी से,
पुंछ नवसेरा से चुप,पोंछ सटकाई के।

x x x

शिमला लाहौर घोषणा के घोंटि के पजेड़,
उजियाइ अब का अजीज के पठाई के?

गाँव आउर गाँवन में मनावे जाये वाला तीज–त्योहार के जिकिर कई गो कवित्तन में बा। गाँवन के छवि त नीमने से उकेराइल बा आ ओ. करा संगही चेतावलो गइल बा–

कूटि–कूटि लाट्टा बर्रे तीसी के खियाई देनी,
बजड़ी के बूँट खूँट बान्हि के जोगाइले।
उमिरि बढ़ावे खाती रेंगनी के काँट खोंटी
ध ध नाँव भउजी के ढेरे गरिआई ले।

भाषा के शालीनता कई बेर पटरी से उतरल बा, जवन साहित्य में ना होखे के चाही। बाकिर एकरा से सहमत होखल संभव नइखे। इ बाति आउर बा कि भोजपुरी में थोड़ बहुत अतिरेक चल जाला। एगो उदाहरण देखीं–

लगबे चिक्कार पारे,लागबि जो टाँग फारे
चाक अस नाभि पर, डंट दे घुसेड़ देबि!

बीर रस में साहित्य सिरजत कवि लो अक्सरहाँ अइसन करत देखा जालें। साहित्य में त मराजाद के धियान राखे के चाहीं। कई गो कवित्तन में सोझही गारी के परयोग भइल बा।

ई संग्रह भारत के जन मानस के सजीव अभिव्यक्ति बा। साँच बात त इहे बा कि पाकिस्तान आउर ओकरे पोसल आतंकी संगठन से इहाँ के लोग परेशान बाड़ें। अइसना में कवि मन यशगान त गाई ना। चेतन जी अइसन कइलो नइखें–

लहू के कसम ले सीवान के शहीदन के
हूलिदे पेशावर ले खींचु खून से लकीर।

एह संग्रह के कवित्त अपने में कारगिल युद्ध, बटालिक, द्रास, बारमूला, रजौरी, पूँछ, मेंढर, आकसाई चीन आ पी ओ के क बाति दमगर ढंग से संजोवले बा। संगही भारत, पाकिस्तान, अमेरिका आ ब्रिटेन के राजनेतन पर लेखनी के प्रहारो कइले बा। भारत आ पाकिस्तान के मिसाइलन के चर्चो बा। भोजपुरिया माटी में जनमला से भोजपुरी भाषा पर स्वभावतः अधिकार बा।अद्भुत गति के संगे संग्रह के भाषा खाँटी भोजपुरी बा ओहमें तत्सम शब्दन के प्रयोग ओकरे सुघराई में चार चान लगा रहल बा। कवि भूषण के इयाद के कवि एक बेर फेर से टटका बनावत कवित्तन के रचले बानी। मुहावरन के प्रयोग भाषा के मारकता के आउर बढ़ा रहल बा।शुभकामना के संगे भोजपुरी के केशव आदरणीय हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी के नमन करत हम अपना लेखनी के विराम दे रहल बानी। ■ ■

■ संपादक, भोजपुरी साहित्य सरिता

ले तीरथ-जल बदरिया, खुशबू छिरिके धाइ

डॉ. सुमन सिंह

कवनो भाषा के साहित्य होखे, ऊ लोक से विमुख नइखे हो सकत। भोजपुरी साहित्य त सबसे ढेर आ गहिराह ढंग से जुड़ल मिलेला। 'सजग शब्द के रंग' ओही लोक रंग में रंगाइल अनुभवी नजर से देखल आ नेह–नात के लेखनी से लिखाइल एगो समृद्ध किताब बा। आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन जी के भव्य आ विराट चेतना से भोजपुरी पाठकगण के परिचय करावे वाला कवितन के ई संग्रह मन के पावन सरोवर से निकसल स्वर–लहरी जस मनुष्यता के करमोवत वृक्षन के पतइन के गुनगुनाहट से गलबाहीं करत प्रकृति आ परिवेश के पियास मेटावे के कूबत राखत बा। हाँफत–तलफत हियरा के जुड़ाए–सुस्ताए के ओहार देबे वाला पेड़ बा।

किताब कवनो विधा के होखे, ओकर आपन प्रकृति आ रीति होले। किताब के रीति के विराटता कलमकार के विशिष्टता से परिचय करावेले। 'सजग शब्द के रंग' के एकहक शब्द 'शब्द ब्रह्म' जस साहित्य के 'सहित भाव' लिहले समय के चूल्हा में, वर्तमान के आँच पऽ डभकत अनुभूति के अदहन में पाकल लगत बा। 'सजग शब्द के रंग' में दोहा, कविता आ गीतन के संकलन बा। ई रचनाकार के सजगता के परिचयक एह से बा कि ई समय के सीना पर कोरोना महामारी के लागल चोट के काल–खंड में सिरजल गइल बा। एह संग्रह में बेचैन लोक–चेतना के सिवान के पहचान के, चिह्नित क के 'सजग शब्द के रंग' के रस्सी–जरीब से नापे के उद्यम भइल बा। कविवर के ई पंक्ति देखीं –

चीख–चित्कार, आह
आ आँखी के लोर,
भीतरी अवयवनि के
खरोंचि रहा बाड़ेसऽ,
हर छन, हर पल
कानन्हि में,
गरम सीसा पिघला के डालि रहल बाड़ेसऽ।

एह संग्रह में छन्दमुक्त कविता के समृद्ध संसार त सिरजाइले बा, छंदो के पलरा पऽ तऊल–तऊल के भाव आ संवेदना के रचना राखल बाड़ी। एह संग्रह में समय के तबाही, दुविधा, हतासा, निराशा, टूटत–बिखरत गाँव, मनुष्यता आ नैतिक पतन के चित्र त बनलहीं बा, ओहके उकेरे बदे शब्दन के काया में अर्थ के दीपदिपात आत्मा के विराटो रूप सँवरल बा।

धड़कन–धड़कन गाँव बा, साँस–साँस बा साँझ।
भोर–पराती प्रान बा, पलक उमर–पग झाँझ।।
हवा बजावे सींकरी, शुभ साइत में आइ।
ले तीरथ–जल बदरिया, खुशबू छिरिके धाइ।।

कविवर चेतन जी वर्तमान के छाती पर ठाढ़ होके भूतो के आँकलन करत रचना कइले बानी त भविष्यो के चेहरा पर सीसा चमकावत भाव व्यक्त कइले बानी। भोजपुरी कविता आ गीतन के काया के आकार–रेखा के सिरिजना में छन्द–बोध, लय–बोध के सथवे जीवनो–बोध के धड़कन धड़कवले बानी। आँखि में उमेद के सपना जगवले बानी।

तींत नीम के नीर अस, जिनगी–नदी गदोर।
तरजूई–पलरा धरीं, पाछिल प्रीति अथोर।।
दुख के रोपल बीज जे, अँकुरावे दिन–रात।
मँगरा बनि चाटत रहे, जिनगी–तरु के गात।।

'सजग शब्द के रंग' में गीत–गजल आ अतुकांत कविता के सथवे मुक्तक, हाइकू आ क्षणिको बा। एहसे एक किताब के मूल्य मलीन नइखे होत, बल्कि अउरी बढ़ जा ता। कविता भा गीत के अन्तरचेतना के सजगता किताब पढ़त बेरा पाठक के आँखिन में आपरूपे झलमला जा ता। 'सूई' आ 'तरवारि' के संगत–पंगत एक साथे देखे के मिलत बा। रचनाकार के धनात्मक चेतना के यथार्थ प्रतिदाया बनल ई किताब साँच के स्वरूप में

वर्तमान के कैनवस पर समकालीन घटकन के रेखा –चित्र करत लोक मंगल के भाव के संकलन लागत बा।

भोजपुरी के हम कतना बहाव
भीतर सँगोरि जीहीं ले।
आवत–जात ज्वार सागर के,
छन–छन ध्रुपद–अलाप सुनींले।।
गूँज प्रकृति के, गति तनाव के,
सजग शब्द के रंग।
अर्थ चाह के, प्रश्न स्वार्थ के,
आ उत्तर के ढंग।
भावन के संकेत पाइके
अरथन के लय–ताल गुनीले।।
भोजपुरी के हम कतना बहाव
भीतर सँगोरि जीहीं ले।।

जिनगी के जियतार बनावे बदे कलमकार के ढेर कारीगरी रहेला। कलमकार इतिहास के उलटे–पलटे के मादा राखेला। कलमकार समाज के सजावे–सँवारेला, सुन्नर सरूप गढ़ेला आ संस्कारित बनावे में आपन महति योगदान देला। हरेराम त्रिपाठी चेतन जी जइसन कलम के साधक जब माई सरस्वती के साधना में लागेला सभे त पूरा के पूरा जुग संस्कारित आ प्रेरित होला। 'सजग शब्द के रंग' भोजपुरी साहित्य के एगो पूरा जुग के प्रभा. वित आ संस्कारित करे वाली रचनन के संग्रह बा। ई हमनी के सुभाग बा कि चेतन जी जइसन साधक भोजपुरी के गौरवान्वित करत बानी सभे।

'सजग शब्द के रंग' में वर्तमान समय के लम्बाई–चौड़ाई के नापे के कविता–यंत्र के भरमार बा। विविध शैली के काव्य–रचना के जतरा करत बेरा राजपथ के अतिरिक्त कहीं पगडंडियो बा त ऊ अकाँट बा आ मोलायम रूई से पाटल बा। पाठकगण के बेर–बेर पढ़े खातिर प्रेरित करे वाला ई 'सजग शब्द के रंग' में सुप्रसिद्ध रचनाकार हरेराम त्रिपाठी चेतन जी के एगो विशेष रूप मिली। अइसन सुन्नर आ प्रेरक पुस्तक के सिरजना खातिर चेतन जी के बेर बेर प्रणाम।

■ ■

■ डी आई जी कॉलोनी
खजुरी, वाराणसी, उ.प्र.

भोजपुरी के मानक दोहा संग्रह : 'भीतर आँत घुआँत बा'

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

राष्ट्रभाषा हिन्दी का सायं अपना मातृभाषा भोजपुरी के भण्डार भरत रहे वाला आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' एगो अइसन प्रतिष्ठित साहित्य मनीषी के नाँवह, जे विगत छह दशकन से लगातार साहित्य–सृजन में तत्पर बानी । उहाँ का गद्य–पद्य का तमाम विधन में साधिकार कुलम चलावे में महारत हासिल बा। एकरा साथे कजरी, होरी, चइता गीतनोशे संग्रह क के 'चेतन' जी भोजपुरी साहित्य के भण्डार भरे में जीव–जान से लागल बानी । महाकविशलिदास प्रणीत 'रघुवंश' आ 'कुमार संभव' का कुछ सर्गन के आ जय–देव का 'गीतगोविन्द' के कुछ गीतन के भोजपुरी में पधानवादी 'चेतन' जी 1973 से 1977 के बीच कर चुकल बानी, जवन उहाँ के संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्ययन का सायं भोजपुरी में काव्मानुवाद कौशल के अप्रतिम उदाहरण बा।

'भीतर आँत घुअँत बा' आचार्य 'चेतन' जी के भोजपुरी दोहा संग्रह ह, जवना में छह सौ बाईस गो दोहा संशलित बार्ड सँ । एह दोहन में मंगलमूर्ति गणेश, ज्ञान के आँखि देके अँखगर बनावे वाला गुरू, समके कल्याणकर वाला भगवान शिव आ विद्या–बुद्धि देवेवाली माई 'सरसती' के वंदना कहलाश बाद कवि 'चेतन' जी वर्तमान सामयिक घटनन आ आम आदमी का जिनगी में आवेवाली अनेक परिस्थितियन के चित्रण कइले बानी, जवना से उहाँ के व्यापक दृष्टि आ सामापेक चिंतन के पता चलत बा। दू पातियन के दोहा में कतना बात कहे के क्षमता हौला, एकर उदाहरन 'चेतन' जी के दोहन में देखल जा सकेला। एह दोहन में आज के लोग, आज के नेता आ आज के फरत–फुलात लूट–पाट, अपरण आदि उद्योग–घंघन के सटीक चित्र केरलबा एह दोहा में –

अकुताइल ई समय बा, भकुआइल बा लोग ।
खखुआइल नेता चलें, लूटपाट उद्योग ।।

एह दोहा में, 'अकुताइल', 'भकुआइल' आ ' खरवु आइल' शब्द ठेठ भोजपुरी के मइलाका सायं सम प्रत्ययान्त (आइल) भइला से दोहा के सुन्दरता बढ़ा देत बाड़े सँ।

आज के शासन तंत्र, लोग बाग आ बोलचाल में आइल गिरावट पर चिंता जतावत दोहाकार 'चेतन' जी के ई दोहा बा–

अस अपाह सत्ता भइल, अस अलाह सम लोग ।
अस अँगजाल कुबोलबा कलह, कुनह के जोगा।।

आज हमनी मोबाइल युग में जी रहल बानी । शायदे केहू अइसन होई जकरा लगे ई 'कनहार' ना होई। इस्कुलिहा लइका से लेके मास्टर–प्रोफेसर आ मंत्री से लेके संतरीतकले केइ के काम एकरा बिना नहखे एकसत। एकरा साथे इहा सही बात बा कि ई हर मनहक चैन छीन लेले बा, एक गवाहबाई दोहा–

अब चिटुकी भर चैन से, जिअल भइल दुसवार।
बड़ मोबाहल मुसीबत शरारती–कन–हार।।

पर्यावरण का असंतुलन से पूरा देश–दुनिया पैमाल बा। हवा में गैस आ धूल–धाकड़ धुलत रहला से फेड़न के पतई–पतई पर वायरस फहल रहल बा। एह बात के बयान करत बा 'चेतन' जी के ई दोहा –

अतुना पिअनी गैस हम, अतुना फँकनी घूर ।
पात–पात में वायरस, बसि गइले सऽ कर ।।

आरक्षण का नाँव पर योग्य मनइन के पीछे ढकेल के अयोग्यन के नोउरी देहला का चलते देश के प्रतिभा विदेशन में पलायन करे खातिर विवक्ष हो रहलि बा –

आरक्षण के चिकइती, ढेर बढ़वलस क्लेश ।
थक, हतासि के हाय, कुल प्रतिभा गइलि विदेश।

कवनो राष्ट्र का नव निर्माण में नयकी पीढ़ी के महत्वपूर्ण योगदान होला। अंग्रेजी हुकूमत से भारत के मुक्तकरा वे में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, एमप्रसाद विस्मल जइसन जवानन का भूमिका से सभे परिचित बा 'आजा' राष्ट्र का नवनिर्माण खातिर नयकी पीढ़ी के एह दोहा का माध्यम से आह्वान कइल बा

औलादो संकलप ले नया सृजन–अभियान ।
असकत, अटपट छोड़ि के, करे राष्ट्र–निरमान।।

परिवार में बेटी आ पतोह में भेद–भावकइल आम बात बा। बेटी हर हाल में लाड़–प्यार के हकदार होले बाकिर कतनो सेवा–भाव रख लो पर पतोह हेठे मानल जाले। जइसे –

कइलस मालिस देह के, खड़ा जोरि दस नोंह ।
तबहूँ बेटी ना बनलि, रहिए गइलि पतोह ।।

केहू के समय हरमेसा एक नियर ना रहेला। कब केकेरा से कवन जरूरत पड़ जाई ई केहू ना जानेला। एह से समका से मेल–मोहब्बत का साथे रहे के सुझाव दीहल बा एह दोहा में –

कब, के, केकर बह भरी, कहाँ उठाई बोझ ।
कर वटली कव करम–फल, कमकर मुउए–झोंझ ।।

हवा, पानी आ अँजोर समका खातिर जरूरी होला। एह पर सभके बरोबर के हक होखे के चाहीं । नात समाज में बगावत होरवे के संभावना रहेला। एही के कवि के कहनाम बा–

काहें हमके कम मिली, पानी अउर बयार ।
रउरा रहीं अंजोर में, हमरा घरे अन्हार ।।

'चेतन' जी लइकन के सवेरे जागे के आ नहा–धोआ के लिखे–पढ़े, खाये–पीये पर घेयान देबे के सुझाव देले बानी एह दोहा का माध्यम से–

किरिनि फुटे के पहिलहीं, बबुआ जागु सबेर ।
नहा–धोइ, पढु–लिखु सजग, रही स्वस्थ तन ढेर ।।

स्वस्थ रहे खातिर लइकन के का खाया–पीय के चाही इहां बता रहल बानी 'चेतन' जी –

किशमिश खा के एत में, पिअड दूर कह देर ।
अँकुरल मूँग, चना सँगे, सुबह छाँछ लऽ ढेर ।।

नारी के सशक्त बनावे का दिशा में देश आगे बढ़ रहल बा । अब औरत अबला ना, बलुक सबला हो चुकल बाड़ी, जवना के उदाहरन कल पना चावला बाड़ी–

जुग पलटल, अव चावला, गइलि चन्द्रमा लोक ।
बेटी अक के शेरनी, गति में ऐकन टोक ।।

माई–बाप का प्रति लइकन में बढ़ रहल उपेक्षा भाव से कवि 'चेतन' जी के चिन्ता एह दोहा में सामने आइल बा –

जेकर खाके अन्न जल जेकर पीके दूध ।
भइल पूत बउँकार अब, ओही के सँग जूघ ।।

ऊपर दीहल अनेक दोहन के उदाहरन से साफ बा कि कविवर 'चेतन' जी के नजर बहुत दूरदर्शी आ पार दर्शी बा। एमें देश काल, आचार विचार, राजनीति, पारिवारिक संबंध आदि विविध विषयन पर दोहन के रचना भइल बा। एह दोहन में लुप्त होत भोज पुरी शब्दन के प्रयोग क के इन्हनी के बचावहूँ के भरपूर प्रयास बाजवन सराहे जोग बा ।

■ ■

■ इन्दिरा नगर, लखनऊ – 226016
मो0 – 9451462773

आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' : इन्द्रधनुषी काव्य-व्यक्तित्व के अमृत महोत्सव समारोह

माधवी उपाध्याय

कवनो विद्वान भा बड़ साहित्यकार खातिर अभिनन्दन समारोह के आयोजन कइल एगो सुखद सपना के नियन होला। सुदीर्घ समय से हमनीके बाबूजी के एह कृति 'आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन : इन्द्रधनुषी काव्य–व्यक्तित्व' के लोकार्पित होखे खातिर प्रतीक्षारत रहीं जा, अखिरकार ऊ सुखद,स्वर्णिम क्षण आइये गइल।

7 मार्च, 2022, सोमार के दिन सिंघभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मलेन/तुलसी भवन में एकर आयोजन के भइल। साहित्य समिति के मानद महासचिव अरु सचिव आ संयोजक डॉ व अजय ओझा जी के देखरेख में ई आयोजन के सही दिशा मिलल।

हिन्दी, भोजपुरी आ संस्कृत के प्रकांड विद्वान, मनीषी साहित्यकार आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी के 80 वाँ जन्मदिन के पुनीत अवसर प उहाँ के अमृत महोत्सव अत्यंत भव्यता के साथ सम्पन्न भइल आ उहाँ के बहुआयमी व्यक्तित्व–कृतत्व प केंद्रित अभिनन्दन ग्रन्थ 'आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' : इन्द्रधनुषी काव्य व्यक्तित्व' के भव्य लोकार्पण कइल गइल। एह कार्यक्रम के अध्यक्षता जमशेदपुर के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार श्री दिनेश्वर प्रसाद 'दिनेश' जी करत रहन। मुख्य अतिथि के रूप में भागलपुर से पधारल रहन श्री रामजन्म मिश्र जी जे विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ के (उपकुलपति) रहले। विशिष्ट अतिथि के रूप में पटना से आइल रहन श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी जी आ आरा से जीतेन्द्र कुमार जी, मुजफ्फरपुर से डॉ. ब्रज भूषण मिश्र जी उपस्थित रहीं। मंच संचालन के बागडोर सम्हरले रही, शिक्षाविद अरु साहित्यकार डॉ. त्रिपुरा झा।

अतिथियन के मंच प बुलावला के बाद कार्यक्रम के शुभारंभ माई वीणा पाणी के सामने

दीप जलावे आ अभिषेक मिश्रा के स्वस्ति पाठ से भइल। पूरा सभागार मंग. लमय ध्वनि से गुंजीत हो उठल। एकरा बाद आचार्य 'चेतन' जी के रचल सुरसती वंदना श्रीमती माधवी उपाध्याय आ श्रीमती वीणा पांडे 'भारती' के सस्वर गान भइल। ओकरा बाद साहित्य समिति के सदस्यन के द्वारा अतिथियन के पुष्प गुच्छ दे के स्वागत कइल गइल। शहर के सुप्रसिद्ध कवि श्री यमुना तिवारी व्यथित जी आपन लिखल काव्यात्मक अभिनन्दन प्रस्तुत कइले।

सर्वभाषा ट्रस्ट (दिल्ली) से श्री केशव मोहन पाण्डेय जी के एह समारोह में शामिल भइल आह्लादक रहे। उहाँ के आचार्य श्री के प्रशस्तिपत्र आ स्मृतिचिन्ह दे के अभिनन्दन कइनी। जमशेदपुर शहर के विदुषी कवयित्री आ कोकिल कंठ श्रीमती रागिनी भूषण जी अभिनन्दन पत्र के पढ़नी, एकरा बाद... अभिनन्दन ग्रन्थ 'आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' : इन्द्रधनुषी काव्य–व्यक्तित्व' के लोकार्पण भइल, जेकर प्रधान संपादक डॉ. ब्रज भूषण मिश्र जी हई। उपस्थित अतिथि लोग आचार्य श्री के अभिनन्दन पत्र, शाल, श्रीफल आ पुष्प गुच्छ दे के स्वागत कइल। शहर के विभिन्न साहित्यिक अरु सांस्कृतिक संस्थान नन के द्वारा चेतन जी के स्वागत आ अभिनन्दन कइल गइल जेकरा में प्रमुख संस्था रहे– सिंघभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मलेन /तुलसी भवन, के द्वारा चेतन जी के अंगवस्त्र, श्रीफल, स्मृतिचिन्ह दे के सम्मानित कइल गइल, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, जमश. ेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद ने चेतन श्री के पगड़ी पहिना के उनकर सम्मान कइलस। चौधरी कन्हैया सिंह आरोही शोध संस्थान, सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन प्रमुख रहे।

श्री कनक किशोर जी आ केशव मोहन पांडेय जी के शाल आ पुष्प गुच्छ दे के तुलसी भवन सम्मानित कइलस। एह अवसर प तुलसी भवन ध्साहित्य समिति के मानद महासचिव श्री प्रसेनजित तिवारी जी, सचिव आ संयोजक डॉ. अजय ओझा जी, अध्यक्ष सुभाष चन्द्र मुनका जी आ साहित्य समिति कार्यकारिणी के सब सदस्य उपस्थित रहे। एह अवसर प वक्ता लोग आपन आपन विचार प्रकट कइल। डॉ. ब्रज भूषण मिश्र जी कहले कि, चेतन जी के भोजपुरी आ हिन्दी के विकास में खास योगदान रहल बा। इहाँ के अनेक पुस्तक के रचना कइले बानी जवना में कुछ नाम उहाँ के सबके सामने र खनी। जइसे– भोजपुरी में उबियान, फूल गंग बरार के, गीत प गीत, सावन के झींसी, हुलिदे पेशावर इत्यादि। हिन्दी में अंतर के आँगन से, पंचामृत, पेममयी शबरी, प्रेम लपेटे अटपटे, युग्म भूमि, विरहिणी मीरा, नंगी छाती की आग, छायावाद का शैल्पिक विधान के चर्चा कइनी। डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी जी चेतन जी के विद्वता आ एह

उमिर में भी उनकर सक्रियता, तेजस्वि ता आ स्मरणशक्ति के भूरि–भूरि बड़ाई करत कहनी कि, इहाँ के काम के कवनो तुलना नइखे कइल जा सकत।

डॉ. जीतेन्द्र कुमार जी कहले– आचार्य 'चेतन' जी एह उमीर में अबहूँ साहित्य साधना करत बानी, इहाँ के लेखनी अबहूँ दिनोंदिन प्रवाहित हो रहल बा। डॉ. जीतेन्द्र चेतन जी के दु गो किताब– युग्म भूमि, आ उलगुलान के आग के तुलनात्मक चर्चा सबके सामने प्रस्तुत कइले। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राम जन्म मिश्र जी कहले कि, आचार्य श्री से अबही बहुत कुछ साहित्यिक अपेक्षा सबके बा, इहाँ के संस्कृत आ कन्नण भाषा के अनुवाद भी कइले बानी, रउवा सास्कृतिक, राष्ट्रवाद के प्रतीक हई।

कार्यक्रम के अंतिम में आचार्य 'चेतन' जी आपन वक्तव्य देनी आ निराला युग के ईयाद करत

आपन बचपन के गलियन में विचरण करत सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी अरु उनका संगे बीतल आपन बहुते रोचक संस्मरण सभागार में उपस्थित जन समूह के सामने रखनी कि कइसे आपन पहिला रचना नि. राला जी के सामने खड़ा होके सुनवनी...! एकरा बाद आपन राष्ट्रवाद के रचना के सस्वर ओजमय पाठ क के सभ लोगनि के अचंभित क देनी, सभागार में शांति आ सन्नाटा छा गइल, सभ कोई मन्त्र मुग्ध हो के सुनत रहे। ओकरा बाद ताली के गड़गड़ाहट से पूरा सभागार गुंजायमान हो गइल। अइसन हमनीके के पहिला बार देखनिजा..! आपस धीरे से लोगन के बात करत सुननी कि, जब एह उमीर में अइसन ओज आ गर्जना बा त जवानी में कइसन होई..!

एह भव्य आयोजन में शहर भर के अनेक लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार आ जानल–मानल युवा रचनाकार लोगन के उपस्थिति रहे जवना में प्रमुख नाम रहे.....शीतल प्रसाद दूबे, डॉ. रागिनी भूषण, श्री राम पांडे भार्गव, शैलेन्द्र पाण्डेय शैल, यमुना तिवारी 'व्यथित', कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी', राजदेव सिन्हा, सोनी सुगंधा, श्री भंजदेव व्यथित, विमल किशोर विमल, संपादक मंडल के प्रमुख श्री कनक किशोर, शिवशंकर शर्मा, अंकु श्री, मधुप जी, कन्हैया सिंह सदय, मिथलेश चौबे, ब्रजेन्द्र नाथ मिश्र, दिलीप ओझा, अनीता सिंह, अनीता निधि, निवेदिता श्रीवास्तव, आरती श्रीवास्तव, उपासना सिन्हा, माधुरी मिश्र, सुष्मिता सलीलात्मजा, श्री अरविंद विद्रोही, संजय पाठक स्नेही, पिंकी सिंह, भास्कर राव, विजय शंकर मिश्र, सुरेश चन्द्र झा, कुमुद शर्मा, वसंत जमशेदपुरी, हरिहर राय चौहान, प्रकाश मेहता, श्यामल सुमन, मंजू ठाकुर, जयंत श्रीवास्तव, राजेंद्र सिंह, शशि ओझा, डॉ. उदय हयात, बाल कृष्ण मिश्रा, अशोक सिंह, नीता सागर चौधरी, संतोष चौबे, आयकर अधिकारी प्रवीण कुमार चौहान, मधु चौहान, सुषमा मिश्रा, नीलम मिश्रा, विभा सिंह, मनोकामना सिंह 'अजय', राजेश भोजपुरिया, शकुंतला शर्मा, राजमंगल पांडे, डॉ. अरुण कुमार शर्मा, वरुण कुमार, उमा पांडे, पद्मा प्रसाद, सरोज सिंह परमार, अशोक शुभदर्शी, क्षमा श्री दूबे, मोहिनी मोहन महतो, रीना गुप्ता, जूही समर्पिता, सरिता सिंह, प्रदीप कुमार मिश्र, शिवनन्दन सिंह, विनसा विवेक, कवलेश्वर पाण्डेय, श्रीमती चंचल शर्मा, श्रीमती प्रतिभा प्रसाद, जितेश तिवारी, विजय नारायण 'बेरुका' एह समारोह के गवाह बनल लोग। परिवार के सभ सदस्य लोग भी एह महनीय अवसर प उपस्थित रहे लोग जइसे, माई श्यामा त्रिपाठी, भैया नीरज नयन त्रिपाठी, सुनयना त्रिपाठी, कैवल्यमणि त्रिपाठी, दिव्येदु त्रिपाठी, किरण त्रिपाठी, श्रुति कीर्ति त्रिपाठी, सुनील कुमार उपाध्याय, श्रेया उपाध्याय, प्रत्युष उपाध्याय आ सुष्मिता राय कार्यक्रम सफलता से सम्पन्न भइल। ई आयोजन भव्य, अविस्मरणीय बन गइल।

भोजपुरिया, शकुंतला शर्मा, राजमंगल पांडे, डॉ. अरुण कुमार शर्मा, वरुण कुमार, उमा पांडे, पद्मा प्रसाद, सरोज सिंह परमार, अशोक शुभदर्शी, क्षमा श्री दूबे, मोहिनी मोहन महतो, रीना गुप्ता, जूही समर्पिता, सरिता सिंह, प्रदीप कुमार मिश्र, शिवनन्दन सिंह, विनसा विवेक, कवलेश्वर पाण्डेय, श्रीमती चंचल शर्मा, श्रीमती प्रतिभा प्रसाद, जितेश तिवारी, विजय नारायण 'बेरुका' एह समारोह के गवाह बनल लोग। परिवार के सभ सदस्य लोग भी एह महनीय अवसर प उपस्थित रहे लोग जइसे, माई श्यामा त्रिपाठी, भैया नीरज नयन त्रिपाठी, सुनयना त्रिपाठी, कैवल्यमणि त्रिपाठी, दिव्येदु त्रिपाठी, किरण त्रिपाठी, श्रुति कीर्ति त्रिपाठी, सुनील कुमार उपाध्याय, श्रेया उपाध्याय, प्रत्युष उपाध्याय आ सुष्मिता राय कार्यक्रम सफलता से सम्पन्न भइल। ई आयोजन भव्य, अविस्मरणीय बन गइल।

■ ■

■ जमशेदपुर, झारखंड

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

अपनइत

(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)

अध्यक्ष : **सरोज त्यागी** संयोजक : **जे.पी. द्विवेदी**

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।